CNEWS सिटी चीफ

सिटी चीफ

वर्ष-14, अंक-362
पृष्ठ-8 मूल्य 2 रूपया

सम्पूर्ण भारत मे चर्चित हिन्दी अखबार

CITYCHIEFSENDMENEWS@GMAIL.COM

इंदौर, गुरुवार 04 अप्रैल 2024

पेज-04

आज का विचार

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन हैं
जो विशेष रूप से शुद्ध किया हो

- स्वामी शंकराचार्य

संजय सिंह 6 महीने बाद तिहाड़ जेल से रिहा, 2 लाख का बॉन्ड भरा

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राज्यसभा सांसद संजय सिंह 6 महीने बाद बुधवार को तिहाड़ जेल से जमानत पर रिहा हो गए। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को उन्हें दिल्ली शराब नीति केस में जमानत दी थी। लीगल प्रोसेस की वजह से मंगलवार को रिहाई नहीं हो पाई थी। संजय सिंह की पत्नी अनीता सिंह जमानत की प्रक्रिया पूरा करने के लिए बुधवार को राउज एवेन्यू कोर्ट पहुंची थीं। कोर्ट ने 2 लाख रुपए के जमानती बॉन्ड और इतने ही अमाउंट की सिक्योरिटी पर जमानत दे दी। संजय सिंह की पत्नी ने 2 लाख का बॉन्ड भरा। कोर्ट ने संजय सिंह की जमानत के लिए तीन शर्तें रखीं। पहला- वे जेल से बाहर जाकर आबकारी नीति केस से जुड़ी कोई बयानबाजी नहीं करेंगे। दूसरा- अपना पासपोर्ट सरेंडर करेंगे। दिल्ली से बाहर जाने पर जांच एजेंसी को बताएंगे और अपनी लाइव लोकेशन शेयर करेंगे। संजय सिंह की रिहाई के बाद आप नेता आतिशी ने कहा- यह सत्य की जीत है। पिछले दो साल से इस फर्जी शराब घोटाले की जांच चल रही है। ईडी, सीबीआई ने हजारों अफसर लगा लिए। सैकड़ों रेड कर ली लेकिन आम आदमी पार्टी के किसी भी नेता के खिलाफ भ्रष्टाचार का एक रुपया भी नहीं मिला।

केजरीवाल की गिरफ्तारी-रिमांड पर फैसला सुरक्षित

नई दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने अपनी गिरफ्तारी और रिमांड को दिल्ली हाईकोर्ट में चुनौती दी है। बुधवार को जस्टिस स्वर्णकांता शर्मा की अदालत में सुनवाई चली। कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। केजरीवाल की ओर से सीनियर एडवोकेट अभिषेक मनु सिंघवी और एडवोकेट विक्रम चौधरी मौजूद रहे। ईडी की तरफ से एएसजी एसवी राजू ने पैरवी की। सिंघवी ने कहा- लेवल प्लेइंग को ध्यान में रखते हुए यह बहुत इम्पॉर्टेंट केस है। इसमें स्वतंत्र और निष्पक्ष लोकसभा चुनाव शामिल हैं, जो लोकतंत्र का हिस्सा है। इससे हमारा मूलभूत ढांचा बनता है। केजरीवाल की गिरफ्तारी से यह निश्चित हो गया है कि वो लोकतांत्रिक गतिविधियों में नहीं शामिल हो पाएंगे। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि पहला समन अक्टूबर 2023 को भेजा गया और गिरफ्तारी 21 मार्च को हुई। इससे दुर्भावना की बू आती है और इससे हमारे मूलभूत ढांचे को नुकसान पहुंच रहा है। मैं यहां राजनीति की नहीं, बल्कि कानून की बात कर रहा हूं। गिरफ्तारी की टाइमिंग इशारा करती है कि यह असंवैधानिक है।

कस्टम की गिरफ्त से 30 स्मगलर भागे, लाए थे साढ़े तीन करोड़ का सोना

लखनऊ। यूपी की राजधानी लखनऊ के एयरपोर्ट से एक हैरान करने वाली घटना सामने आई है। सोने की तस्करी के 30 संदिग्धों को कस्टम विभाग ने हिरासत में लिया लेकिन वो सभी कुछ घंटे बाद रहस्यमय परिस्थितियों से फरार हो गए। संदिग्ध तस्कर शारजाह से 3.5 करोड़ का सोना लेकर लखनऊ एयरपोर्ट पर उतरे थे। कस्टम विभाग की टीम ने उनके पास से 25 लाख रुपये नकद भी बरामद किए थे और सभी को एयरपोर्ट परिसर की कड़ी सुरक्षा में रखा गया था। इसके बावजूद सभी रहस्यमय परिस्थितियों में फरार हो गए। मामला खुलने पर लखनऊ पुलिस को जानकारी दी गई तो पुलिस हरकत में आई। अभी तक इस पर डीआरआई या कस्टम विभाग ने बयान जारी नहीं किया है और न ही किसी कर्मचारी पर कार्रवाई होने की बात नजर आ रही है। लखनऊ पुलिस का कहना है कि स्मगलरों के बारे में जानकारी एकत्र की जा रही है।

कलेक्टर गाइड लाइनः मध्यप्रदेश पंजीयक एवं मुद्रांक कार्यालय के प्रस्ताव को चुनाव आयोग से एनओसी मिली

आज से नए रेट से होगी प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री

भोपाल। मध्यप्रदेश में कलेक्टर गाइड लाइन के अनुसार जमीनों की दरें बढ़ाने के प्रस्ताव को चुनाव आयोग ने एनओसी दे दी है। नई दरों से रजिस्ट्री गुरुवार से होगी। प्रदेश में करीब 60 हजार लोकेशन पर प्रॉपर्टी के दाम औसत पांच प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक बढ़ाए गए हैं। मध्यप्रदेश पंजीयक एवं मुद्रांक कार्यालय ने एक अप्रैल से प्रदेश भर में कलेक्टर गाइड लाइन के हिसाब से जमीनों की कीमत बढ़ाने का प्रस्ताव तैयार कर लिया था। नई दरें बढ़ाने के लिए चुनाव आयोग से एनओसी मांगी थी, जिसकी अनुमति मिलने के बाद बुधवार को सभी जिला कलेक्टरों को नई गाइड लाइन का पालन करने के लिए पंजीयक एवं मुद्रांक महानिरीक्षक ने लिखा।

प्रदेश की 1 लाख 20 हजार लोकेशन में से करीब 60 हजार लोकेशन में बढ़ोतरी की गई है। भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर में करीब 14 हजार लोकेशन में से सिर्फ 20 प्रतिशत लोकेशन पर ही दाम बढ़ाए गए हैं। इस बार दरें बढ़ाने के लिए जीआई बेस्ड डेटा का इस्तेमाल किया गया। नई गाइड लाइन के तहत दरें राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, नई रोड, रेलवे स्टेशन बस स्टेशन, एयरपोर्ट, अस्पताल, बाजार, नए व्यवस्थित डेवलपमेंट क्षेत्र में बढ़ाई गईं। जानकारी

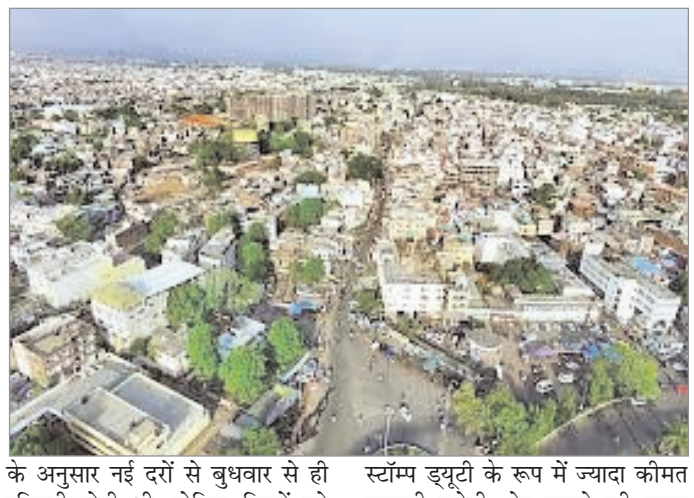

के अनुसार नई दरों से बुधवार से ही रजिस्ट्री होनी थी, लेकिन जिलों को बुधवार को आदेश जारी होने के चलते अब गुरुवार से नई दरों से रजिस्ट्री होगी।

इन्फ्रास्ट्रक्चर के बड़े प्रोजेक्ट की वजह से बढ़े दाम- भोपाल जिले की 1443 लोकेशन पर 5 से लेकर 95 फीसदी तक जमीनों के दाम बढ़ाने के कारण अब रजिस्ट्रियां महंगी होंगी। शहर में कोलार रोड, अयोध्या बायपास, सलैया, मिसरोद, अरेरा हिल्स, बावड़िया कलां में प्रॉपर्टी के रेट सबसे ज्यादा बढ़े हैं। कई जगह पर 70 हजार प्रति वर्ग मीटर तक रेट पहुंच गए हैं। ऐसे में प्रॉपर्टी की रजिस्ट्री करने पर स्टॉम्प ड्यूटी के रूप में ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी। रेट बढ़ाने की वजह मेट्रो, सिक्स लेन जैसे इन्फ्रास्ट्रक्चर के बड़े प्रोजेक्ट शामिल हैं। भोपाल के जिला पंजीयक स्वप्नेश शर्मा ने बताया कि आज बुधवार को आदेश जारी कर दिए हैं। नई गाइड लाइन के अनुसार रजिस्ट्री गुरुवार से होगी।

स्टॉम्प ड्यूटी के रूप मे चुकानी होगी ज्यादा कीमत भोपाल में कुल 3900 लोकेशन हैं। इनमें शहर में 3110 और ग्रामीण क्षेत्रों में 790 लोकेशन हैं। नई प्रस्तावित गाइडलाइन में कुल 1443 लोकेशन में इस गाइड लाइन को लागू किया गया है। इसमें से शहरी क्षेत्र में 1228 और ग्रामीण क्षेत्र में 215 क्षेत्र शामिल हैं। नई गाइडलाइन लागू होने के बाद जमीन और मकान की खरीदी-बिक्री में लोगों को स्टॉम्प ड्यूटी के रूप में ज्यादा कीमत चुकानी पड़ेगी। भोपाल के मिसरोद के वार्ड-52 के दृष्टि ऐनक्लेव, बावड़िया कलां में सबसे ज्यादा दाम 44.23ल बढ़े हैं। होशंगाबाद रोड पर 42.04ल, कोलार के ग्राम गेहूंखेड़ा में 42.04ल, अयोध्या नगर में हाउसिंग बोर्ड के सभी फेज 40.10ल दर बढ़ाई गई है।

इंदौर में प्रॉपर्टी बाजार को नई दिशा मिलेगी- इंदौर जिले में कुल 5085 क्षेत्रों में से 2300 क्षेत्रों में बढ़ोतरी की गई है। नई गाइडलाइन के अनुसार, आवासीय प्लॉटों की वृद्धि में औसत 10ल की बढ़ोतरी की गई है, जबकि 130 क्षेत्रों में 50 से 75 और 100 फीसदी तक की बढ़ोतरी हुई है। नई गाइडलाइनइंदौर के आवासीय प्रॉपर्टी बाजार को नई दिशा में बदल सकती हैं। दरअसल इस नई गाइडलाइन के तहत शहर के प्रमुख क्षेत्रों में आवासीय प्लॉटों की बढ़ती कीमतों में अलग-अलग इजाफा हुआ है। जानकारी के अनुसार इसमें शहरी क्षेत्र में समाजवाद नगर, शेखर सेंट्रल, और गुलमोहर कॉलोनी के क्षेत्रों में एकमुश्त रेट में वृद्धि हुई है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में सिंहासा और माली बरोडिया के क्षेत्रों में कम रेटों की वृद्धि की गई है।

गाइडलाइन के अनुसार इंदौर के महंगे क्षेत्र

-एमजी रोड, वार्ड 57 ओल्ड पलासिया- 12,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-शेखर सेंट्रल- 10,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-स्नेह नगर- 11,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-गुलमोहर कॉलोनी- 7,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-वेयर हाउस रोड, रानीपुरा- 9,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-जवाहर मार्ग- 9,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-राजानी भवन- 10,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-जेल रोड- 11,000 रुपए प्रति वर्गफीट
-अनूप नगर- 12,000 रुपए प्रति वर्गफीट

गाइडलाइन के अनुसार इंदौर के सस्ते क्षेत्र-

-सिंहासा- 300 रुपए प्रति वर्गफीट
-सिंदोड़ा, कलारिया- 100 रुपए प्रति वर्गफीट
-माली बरोडिया, पानोड़, आख्या- 100 रुपए प्रति वर्गफीट
-पिवड़ाय- 110 रुपए प्रति वर्गफीट
-हासांखेड़ी- 270 रुपए प्रति वर्गफीट

वीवीपैट मामले पर अगले हफ्ते सुनवाई करेगा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ईवीएम के साथ वीवीपैट मशीन की पर्चियों के मिलान के मामले पर अगले हफ्ते सुनवाई के लिए तैयार हो गया है। जस्टिस संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि एडीआर की तरफ से दायर की गई याचिका अगले हफ्ते मंगलवार या बुधवार के लिए सूचीबद्ध की जाएगी। याचिकाकर्ता संगठन एडीआर की तरफ से सुप्रीम कोर्ट में पेश हुए वकील प्रशांत भूषण ने मांग की कि याचिका पर जल्द सुनवाई की जाए। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को वीवीपैट के मुद्दे पर दायर एक अन्य याचिका पर चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को नोटिस भेजकर जवाब मांगा था।

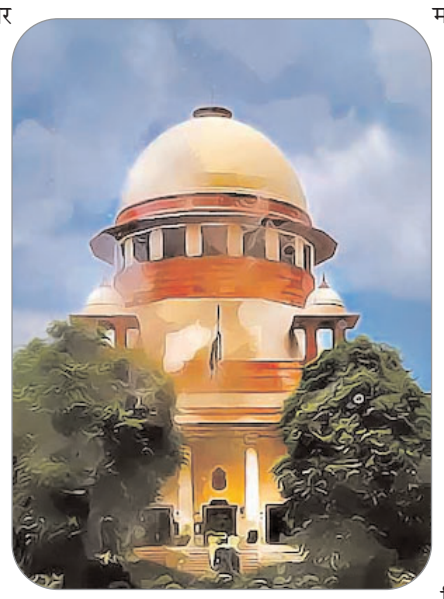

वरिष्ठ वकील गोपाल शंकर नारायणन भी इस मामले में कोर्ट में पेश हुए और उन्होंने कहा कि चुनाव नजदीक हैं और अगर इस मामले पर सुनवाई नहीं की गई तो यह याचिका निष्फल हो जाएगी। जस्टिस खन्ना के साथ ही पीठ में जस्टिस एमएम सुंदरेश और जस्टिस बेला एम त्रिवेदी भी शामिल रहे। पीठ ने कहा कि वे हालात से वाकिफ हैं और अगले हफ्ते मामले पर सुनवाई करेंगे। बीते साल 17 जुलाई को शीर्ष अदालत ने एडीआर की याचिका पर चुनाव आयोग से जवाब मांगा था। अपनी याचिका में एनजीओ ने मांग की है कि चुनाव आयोग और केंद्र सरकार यह सुनिश्चित करें कि मतदाता वीवीपैट मशीन के जरिए अपने वोट की पुष्टि कर सकें।

वीवीपैट पर्चियों से वोटों के मिलान की मांग सुप्रीम कोर्ट में एसोसिएशन फॉर डेमोक्रटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) ने याचिका दायर कर ईवीएम मशीनों के साथ वीवीपैट (वोटर वेरिफाइड पेपर ऑडिट ट्रेल) पर्चियों का मिलान करने की मांग की थी। वीवीपैट एक स्वतंत्र वोट सत्यापन मशीन है, जिससे पता चलता है कि मतदाता ने जो वोट डाला है, वो सही तरीके से डाला गया है या नहीं। अभी वीवीपैट पर्चियों के माध्यम से सिर्फ पांच कोई भी चयनित ईवीएम के सत्यापन का चलन है। सुप्रीम कोर्ट के वकील और सामाजिक कार्यकर्ता अरुण कुमार अग्रवाल ने भी सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर वीवीपैट पर्चियों की पूरी गिनती करने और उनकी ईवीएम से मिलान करने की मांग की है।

पीएम मोदी बोले- भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई जारी रहेगी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नमो एप के जरिए पश्चिम बंगाल के भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ वर्चुअल बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों के पास दो ही विकल्प है। पहला जमानत और दूसरा जेल। पूरे देश ने देखा है कि कैसे टीएमसी ने भाजपा कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए हिंसा का सहारा लिया, लेकिन हमारे कार्यकर्ता निडर होकर डटे रहे। पीएम मोदी ने कहा कि भ्रष्टाचारियों ने एक साथ आकर गठबंधन बनाया है और मोदी को गाली देते रहते हैं। लेकिन मैं आज स्पष्ट कर दूं कि मोदी भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई करना बंद नहीं करेगा। उनके पास दो ही विकल्प बचे हैं, जेल या जमानत। पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल में चुनावी हिंसा सबसे बड़ी चुनौती है। लेकिन चुनाव आयोग ने लोगों की सुरक्षा का इंतजाम किए हैं। हम सभी पश्चिम बंगाल में होने वाली घटनाओं पर भी नजर रखते हैं। हमें हर मतदाता के घर तक पहुंचना है, लोगों को निडर होकर मतदान करने के लिए प्रेरित करें।

भाजपा को रोकने के लिए टीएमसी हिंसा करती है भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ वर्चुअल

बातचीत में पीएम मोदी ने कहा कि हर चुनाव से पहले टीएमसी किसी न किसी तरह से भाजपा कार्यकर्ताओं को रोकने की कोशिश करती है। देश ने देखा है कि कैसे भाजपा कार्यकर्ताओं ने धमकियों के बावजूद काम किया है। टीएमसी हिंसा का सहारा लेकर भाजपा को रोकने की कोशिश करती है। देश ने यह भी देखा है कि कैसे भाजपा कार्यकर्ता निडर होकर अपने बूथों पर खड़े थे। हमें इस बार अधिक सीटें जीतने का भरोसा है।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को बिहार के जमुई में चुनावी रैली को संबोधित किया। पीएम मोदी ने अपने संबोधन के दौरान चिराग पासवान को छोटा भाई बताया। नीतीश कुमार के काम की तारीफ की और लालू यादव को लैंड फॉर जॉब मामले में घेरा।, आज जमुई की इस धरती पर उमड़ा जनसैलाब बता रहा है कि जनता का मूड क्या है। जमुई से भाजपा और एनडीए के पक्ष में उठी ये हुंकार बिहार के साथ ही पूरे देश में गूंज रही है।रेलवे में भर्ती के नाम पर जो लोग गरीब युवाओं से जमीन लिखवा लें, वो बिहार के युवाओं का कभी भला नहीं कर सकते।

अरबपतियों की दुनिया- मुकेश अंबानी ने दुनिया के नौवें सबसे अमीर व्यक्ति के रूप में अपना स्थान बरकरार रखा

फोर्ब्स की विश्व के अरबपतियों की 2024 लिस्ट में 200 भारतीयों के नाम

नई दिल्ली। फोर्ब्स की विश्व के अरबपतियों की 2024 की सूची में इस बार 200 भारतीयों के नाम शामिल हैं। पिछले साल इसमें 169 भारतीयों का नाम था। इन भारतीयों की कुल संपत्ति 954 अरब डॉलर है, जो पिछले साल के 675 अरब डॉलर से 41 फीसदी अधिक है। फोर्ब्स की भारतीय अरबपतियों की सूची में सबसे ऊपर मुकेश अंबानी का नाम है, जिनकी कुल संपत्ति 83 अरब डॉलर से बढ़कर 116 अरब डॉलर हो गई, जिससे वे 100 अरब डॉलर क्लब में प्रवेश करने वाले पहले एशियाई बन गए। मुकेश अंबानी ने दुनिया के नौवें सबसे अमीर व्यक्ति के रूप में अपना स्थान बरकरार रखा और भारत और एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति हैं।

अडानी दूसरे सबसे अमीर भारतीय

गौतम अडानी सूची के अनुसार दूसरे सबसे अमीर भारतीय हैं। उनकी संपत्ति में 36.8 अरब डॉलर का इजाफा हुआ। वे 84 अरब डॉलर की संपत्ति के साथ सूची में 17वें स्थान पर हैं। सावित्री जिंदल भारत की सबसे अमीर महिला बनी हुई हैं। भारत के सबसे अमीर लोगों की सूची में उनका नाम चौथे स्थान पर है। एक साल पहले वह छठे स्थान पर थीं। उनकी कुल संपत्ति 33.5 अरब डॉलर है।

पच्चीस नए भारतीय अरबपति

सूची में पच्चीस नए भारतीय अरबपतियों ने डेब्यू किया है। इनमें नरेश त्रेहन, रमेश कुन्हीकन्नन और रेणुका जगतियानी का नाम शामिल हैं। वहीं, बायजू रवींद्रन और रोहिका मिस्त्री का नाम सूची से बाहर हो गया है।

ये हैं भारत के 10 सबसे अमीर लोग

मुकेश अंबानी- नेट वर्थ 116 अरब डॉलर
गौतम अडानी- कुल संपत्ति 84 अरब डॉलर
शिव नादर- कुल संपत्ति 36.9 अरब डॉलर
सावित्री जिंदल- नेट वर्थ 33.5 अरब डॉलर
दिलीप सांघवी- नेट वर्थ 26.7 अरब डॉलर
साइरस पूनावाला- कुल संपत्ति 21.3 अरब डॉलर
कुशल पाल सिंह- नेट वर्थ 20.9 अरब डॉलर
कुमारमंगलम बिड़ला - कुल संपत्ति 19.7 अरब डॉलर
राधाकिशन दमानी- कुल संपत्ति 17.6 अरब डॉलर
लक्ष्मी मित्तल- कुल संपत्ति 16.4 अरब डॉलर

सिंगल कॉलम

इंदौर में ई-रिक्शा की टक्कर से छात्रा की मौत, कोचिंग जा रही थी युवती

इंदौर। ई-रिक्शा की टक्कर से कोचिंग पढ़ने जा रही एक्टिवा सवार युवती की गुरुवार को मौत हो गई। 19 साल की शैलजा पिता राकेश एक्टिवा से कोचिंग पढ़ने जा रही थी, सामने से अंधगति से आ रहे ई-रिक्शा चालक ने लापरवाही से युवती को टक्कर मारी, जिससे उसकी मौत हो गई । घटना छोटा बांगड़दा की बताई जाती है।

फिरौती लेकर डिग्री लेने रुस जाना चाहती थी नर्सिंग छात्रा, करा था फर्जी अपहरण का नाटक

खुद के अपहरण की साजिश कर 30 लाख रुपये मांगने वाली नर्सिंग छात्रा काव्या और उसके दोस्त हर्षित को कोटा पुलिस ले गई। काव्या ने अपराध शाखा के समक्ष स्वीकारा कि वह डिग्री लेने रुस जाना चाहती थी।आगे की पूछताछ कोटा पुलिस करेगी।बैराड़ (शिवपुरी) निवासी काव्या ने 18 मार्च को अपहरण की सूचना दी थी।काव्या ने हाथ-पैर और मुंह बंधे फोटो भेजे और कहा कि उसका अपहरण हुआ है। स्कूल संचालक पिता रघुवीर से रिहाई के बदले 30 लाख रुपये मांगे। अपराध शाखा ने मंगलवार को काव्या धाकड़ और हर्षित यादव को शिवाजीनगर (देवगुराड़िया) से सुरेंद्र सिंह के मकान से पकड़ लिया। दोनों ने पूछताछ में बताया कि साजिश का खुलासा होने पर दोनों घबरा गए थे। उनके पास रुपये भी समाप्त हो गए थे। पुलिस के दबाव के कारण दोस्तों ने मदद से इन्कार कर दिया। डर के कारण दोनों बगैर टिकट के अमृतसर पहुंचे और गुरुद्वारा में रुके। लंगर खाया और दिन गुजारते रहे। इंटरनेट मीडिया पर उनके बारे में प्रकाशित खबरें पढ़ी और पुलिस की गतिविधियों पर नजर रखी। जैसे ही पुलिस की सक्रियता घटी देवगुराड़िया में रुम ले लिया। पूछताछ में छात्रा ने बताया कि माता-पिता उसे नर्सिंग का कोर्स करवाना चाहते थे। उस पर पढ़ाई का दबाव था। वह स्वजन को निराश नहीं करना चाहती थी। हर्षित के साथ साजिश की और सोंचा रुस जाकर डिग्री ले लेगी। एडिशनल डीसीपी राजेश दंडोतिया के मुताबिक कोटा के विज्ञाननगर थाना में अपहरण की एफआईआर दर्ज है। कोटा में कथन दर्ज होने के बाद ही आगे की कार्रवाई होगी।

अभिनेता आशुतोष राणा ने किए भगवान महाकाल के दर्शन

उज्जैन। ज्योतिर्लिंग महाकाल मंदिर में बुधवार शाम प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता आशुतोष राणा ने भगवान महाकाल के दर्शन किए।
उन्होंने नंदी हाल से भगवान महाकाल को शीश नवाया। इससे पहले भी वे कई बार भगवान के दर्शन करने उज्जैन आ चुके हैं।
विक्रम नाट्य समारोह में बुधवार शाम कालिदास संस्कृत अकादमी में भोपाल के बालेन्द्र सिंह के निर्देशन में तैयार अंधा युग नाटक का मंचन हुआ। गुरुवार रात 8 बजे फिल्म अभिनेता, लेखक और वक्ता आशुतोष राणा द्वारा अभिनीत 'हमारे राम' नाटक का मंचन होगा। इन दिनों बड़ी संख?या में देश-विदेश से भक?त भगवान महाकाल के दर्शन करने पहुंच रहे हैं। महाकालेश?वर मंदिर के साथ ही महाकाल महालोक निहारने भी बड़ी संख?या में श्रद्धालु आ रहे हैं। उज?जैन के काल भैरव, चिंतामन गणेश, हरसिद्धि मंदिर में भी बड़ी संख?या में पहुंच रहे हैं।

बाइक पर जा रहे थे दो युवक, पुलिस ने रोककर जांच की तो मिली 9 किलो चांदी

उज्जैन । लोकसभा चुनाव को लेकर पुलिस और प्रशासन ने सख्ती से वाहनों की जांच शुरू कर दी है। मंगलवार रात को आगर रोड मकोड़ियाआम नाके पर बाइक पर जा रहे सुसनेर निवासी दो युवकों को जांच के लिए रोका था। दोनों के कब्जे से पुलिस ने नौ किलो चांदी बरामद की है। दोनों के पास चांदी से संबंधित बिल नहीं थे। इस पर पुलिस ने चांदी जब्त कर ली है।पुलिस ने बताया कि मंगलवार देर रात को आगर रोड पर मकोड़ियाआम नाके पर वाहनों की जांच की जा रही थी। इसी दौरान बगैर नंबर की बुलेट पर दो युवक जा रहे थे। पुलिस ने जांच के लिए रोका तो युवकों ने अपने नाम विजेंद्र पुत्र राजकुमार सोनी उम्र 40 वर्ष निवासी सुसनेर आगर मालवा, अमन पुत्र गोपाल सोनी उम्र 19 वर्ष निवासी राठिका मंदिर सराफा बाजार सुसनेर बताया। पुलिस ने युवकों के पास रखे झोले की जांच की तो उसमें चांदी के आभूषण रखे थे। जिनका वजन करीब नौ किलो था। जेवरात के संबंध में पूछताछ करने पर दोनों युवक संतोषजनक जवाब नहीं दे सके। इस पर उसे जब्त कर लिया गया है। युवकों ने चांदी का कच्चा बिल पुलिस को बताया था। हालांकि पुलिस ने इसके बाद भी चांदी के आभूषण व वाहन जब्त कर लिए हैं। दोनों युवकों से पूछताछ की जा रही है।

अति आत्मविश्वास से बचें, जुलूस, रैलियों से कुछ नहीं होगा, बूथस्तर पर काम करें- जेपी नड्डा

इंदौर। भाजपा क्लस्टर की बुधवार शाम हुई समीक्षा बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नड्डा ने कार्यकर्ताओं को अति आत्मविश्वास से बचने को कहा। उन्होंने कहा कि यह बात सही है कि कांग्रेस कहीं भी मजबूत स्थिति में नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम अति आत्मविश्वास में आ जाएं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी प्रतिदिन 16 से 18 घंटे काम करते हैं। चुनाव प्रचार करते हैं। यह हमारा भी कर्तव्य है कि हम पार्टी के लिए 16 से 18 घंटे काम करें। हमें कार्यकर्ताओं और मतदाताओं से जीवंत संपर्क में बने रहना है।

बैठक दोपहर तीन बजे शुरू होनी थी, लेकिन यह साढ़े तीन घंटा देरी से शाम करीब साढ़े छह बजे शुरू हुई। नड्डा ने कहा कि हमें खेल संगठन, सामाजिक संगठन, युवा मतदाताओं को पार्टी से जोड़ना है। अगर हम यह कर लेंगे तो हमारी प्रचंड जीत निश्चित है। उन्होंने महिला मोर्चा के पदाधिकारियों से कहा कि कि आप छोटे-छोटे महिला संगठनों से संपर्क करें। महिला संगठनों की सदस्यों को मोर्चा से जोड़ने का काम करना है। कम से कम तीन बार मतदाताओं से संपर्क करें नड्डा ने जीत का मंत्र देते हुए जनप्रतिनिधियों से कहा कि हमें बार-बार मतदाताओं के बीच जाना है और उन्हें अपनी बात समझाना है। उदाहरण देते हुए कहा कि कि मान लो किसी गांव के मत पार्टी को नहीं मिलते हैं, तो आपको उसे ऐसे ही नहीं छोड़ना है बल्कि ज्यादा मेहनत करना है। बार-बार वहां जाएं। पहली बार जाएंगे तो मतदाता नाराजगी जताएंगे, दूसरी बार में नाराजगी कुछ कम होगी, तीसरी बार वे कुछ शिकायतें बताएंगे, समस्याएं बताएंगे। चौथी बार में आप पार्टी के काम लोगों को बताएं। उन्हें बताएं कि कैसे मोदी के नेतृत्व में विकास हो रहा है। पांचवीं बार में निश्चित ही मतदाता की मानसिकता बदलेगी और वे शांति के साथ आपकी बात सुनेंगे। पार्टी की विचारधारा से जुडेंगे। नड्डा ने दिए ये मंत्र -बूथवार रणनीति तैयार की जाए। प्रत्येक बूथ को महत्वपूर्ण मानकर तैयारी करें। -हारे बूथों पर विशेष ध्यान दिया जाए। -जीत के अंतर को बढ़ाने के पूरे प्रयास किए जाएं। -प्रत्येक बूथ पर 370 नए मतदाताओं को पार्टी से जोड़ा जाए। इसके लिए माइक्रो मैनेजमेंट किया जाए। हम छिंदवाड़ा सीट पांच लाख मतों से जीतेंगे मीडिया से चर्चा में कैबिनेट मंत्री विजयवर्गीय ने कहा कि हमारे लिए हर सीट महत्वपूर्ण है। उन्होंने दावा किया कि भाजपा की लीड हर सीट पर पहले के मुकाबले बढ़ेगी। इस बार हम छिंदवाड़ा सीट पांच लाख मतों से जीत रहे हैं। इंदौर भी हम आठ लाख से ज्यादा मतों से जीतेंगे। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का सफाया तय है। कैबिनेट मंत्री विजय शाह ने कहा कि भाजपा हर चुनाव को गंभीरता से लेती है। खरगोन से भाजपा प्रत्याशी गजेंद्र पटेल ने कहा कि चुनाव में एंटी इंकम्बेंसी जैसी कोई बात नहीं है। हमारे कार्यकर्ता उत्साह से लबरेज हैं। धार से प्रत्याशी सावित्री ठाकुर ने कहा कि हमारे साथ मोदी की गारंटी है। इंदौर से प्रत्याशी शंकर लालवानी ने भी पिछली बार से ज्यादा मतों से विजय होने का दावा किया।

ये भी हुए बैठक में शामिल

बैठक में कैबिनेट मंत्री तुलसी सिलावट, नागर सिंह चौहान, विजय शाह, चैतन्य कश्यप, निर्मला भूरिया के अलावा राज्यसभा सदस्य व इंदौर लोकसभा क्षेत्र प्रभारी डा. सुमेरसिंह सोलंकी, प्रदेश संगठन मंत्री हितानंद शर्मा, इंदौर, झाबुआ, धार, खरगोन और खंडवा के पार्टी प्रत्याशी शंकर लालवानी, अनीता चौहान, सावित्री ठाकुर, गजेंद्र पटेल और ज्ञानेश्वर पाटील मौजूद थे।

इंदौर में बेटे ने वृद्ध मां की गर्दन काटकर की हत्या, बड़ा बेटा गिरफ्तार

केलौदहाला में सिरफिरे बेटे ने वृद्ध मां की गला काटकर हत्या कर दी।हत्या के बाद भी आरोपित घर में टहलता रहा। पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर लिया हैडीसीपी जोन-2 अभिनय विश्वकर्मा के मुताबिक घटना बुधवार दोपहर करीब ढाई बजे की है। 75 वर्षीय रतनबाई उदयराम शर्मा की बड़े बेटे गोपाल शर्मा ने दराता से वार कर हत्या की है। छोटे बेटे राजेश शर्मा ने पुलिस को बताया घर दो हिस्सों में बना है। पूराने मकान में मां रहती है। करीब सवा बजे तक मां, भाई और भतीजे घर में पूजा कर रहे थे। कुछ देर बाद घर के बाहर भीड़ नजर आई तो मां को देखने आया। गोपाल के कपड़ों पर रक्त लगा था और टहल रहा था। थोड़ी देर में पुलिसकर्मी भी आ गए।गोपाल से पूछा तो कहा उसने मां को मारा है। रतनबाई का शव सोफे पर पड़ा हुआ था।पुलिस के मुताबिक गर्दन पर कई वार किए गए है। गोपाल को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो गुमशुम बैठा रहा। मां को मारा यह तो स्वीकारा लेकिन क्यों मारा इस सवाल पर चुप्पी साध ली। राजेश के मुताबिक 55 वर्षीय गोपाल की पत्नी 30 साल पूर्व चली गई।एक बेटा नाना-नानी के पास ग्राम भाईखेड़ा (देपालपुर) में रहता है।एक बेटा गोपाल के साथ रहता है। रातभर गांव में घुमता रहता था आरोपित कुछ दिनों से गोपाल की मनौस्थिति सही नहीं थी। स्वजन ने उसको डॉक्टर को भी दिखाया था। आरोपित का उपचार चल रहा था। गांव वालों ने बताया वह रातभर गांव में घुमता रहता था। संभवत- कहासुनी के बाद क्रोध में हत्या की है। शर्मा परिवार खेती करता है। गोपाल और राजेश की तराना (उज्जैन) में 30 बीघा जमीन है।

इंडोनेशियाई माड्यूल को सप्लाई हुए खाते एक में आठ अरब का ट्रांजेक्शन मिला

इंदौर। मामूली धोखाधड़ी की जांच कर रही क्राइम ब्रांच सैकड़ों करोड़ का ट्रांजेक्शन देखकर चौंक गई। जांच में सामने आया कि जालसाजों को खातों की सप्लाई इंदौर के महालक्ष्मी नगर से हो रही थी। एक बैंक खाते में 800 करोड़ रुपये का ट्रांजेक्शन मिला है जो हनुमानगढ़ (राजस्थान) की एक फर्म के नाम पर खुला था। क्राइम ब्रांच द वाइन ग्रुप (टीवीजी) धोखाधड़ी केस की जांच कर रही थी। पुलिस ने आदित्य मुकेश बोड़ोतर (निपानिया), आदित्य मालवीय (सुसनेर) और मानव उर्फ नरेश लोहार को गिरफ्तार किया तो पता चला आरोपित महालक्ष्मी नगर स्थित एक होटल से गिरोह संचालित कर रहे थे। इनका काम गरीब, मजदूर, छोटे दुकानदार और जरूरतमंदों के नाम पर बैंक खाते (करंट) खुलवा कर ठगों तक पहुंचाना था। मानव को खाते खुलवाने पर वेतन नहीं, बल्कि खाते में जमा होने वाली राशि का 30 प्रतिशत तक कमीशन मिलता था। उनके द्वारा खुलवाए खातों में प्रतिदिन करोड़ों रुपये जमा हो रहे थे। एक खाता हनुमानगढ़ (राजस्थान) की अनाज की फर्म का मिला, जिसमें 800 करोड़ (आठ खरब) रुपयों का ट्रांजेक्शन हुआ है। इसमें जमा हुई राशि गुजरात होते हुए इंडोनेशिया पहुंची थी।

उज्जैन व्यापार मेले का असर, लक्ष्य से 65 करोड़ पीछे रह गया इंदौर

इंदौर। प्रदेश में राजस्व देने के मामले में इंदौर परिवहन कार्यालय हमेशा अव्वल रहा है। तय लक्ष्य से हमेशा अधिक राजस्व एकत्र किया गया, लेकिन वित्त वर्ष 2023-24 में इंदौर लक्ष्य से 65 करोड़ रुपये पीछे रह गया। मार्च में उज्जैन में आयोजित हुए व्यापार मेले की वजह से इंदौर पिछड़ गया। 15 लाख से अधिक कीमत के वाहन उज्जैन व्यापार मेले में पंजीकृत होने से इंदौर का राजस्व प्रभावित हुआ। अनुमान के अनुसार इंदौर में पंजीकृत होने वाले करीब 500 वाहन उज्जैन में पंजीकृत हुए। ग्वालियर की तर्ज पर पहली बार उज्जैन में व्यापार मेला आयोजित किया गया। यहां मिलने वाली छूट की वजह से आसपास के परिवहन कार्यालयों में पंजीकृत होने वाले वाहन उज्जैन में पंजीकृत हुए। इससे सर्वाधिक प्रभावित इंदौर परिवहन कार्यालय हुआ। इंदौर में पंजीकृत होने वाले मालवा-निमाड़ के अधिकांश वाहन व्यापार मेले की वजह से उज्जैन में पंजीकृत हुए। इस कारण इंदौर परिवहन कार्यालय 931.26 करोड़ का राजस्व लक्ष्य हासिल नहीं कर सका। वित्त वर्ष 2023-24 में परिवहन विभाग ने 865.42 करोड़ रुपये राजस्व एकत्र किया। मार्च माह में 44 करोड़ राजस्व इंदौर परिवहन कार्यालय द्वारा वित्त वर्ष के आखिरी माह में तमाम प्रयास के बाद भी 44.73 करोड़ रुपये ही राजस्व एकत्र हो पाया। यह पूरे वित्त वर्ष के सभी माह के सबसे कम आंकड़ा रहा। 2022-23 मार्च के 78.49 करोड़ रुपये राजस्व प्राप्त हुआ था, लेकिन वित्त वर्ष 2023-24 के मार्च में 36 करोड़ रुपये पीछे रह गया। वर्ष 2022-23 से भी 26 करोड़ पीछे इंदौर परिवहन कार्यालय ने वित्त वर्ष 2022-23 में प्रदेश में सर्वाधिक 891.84 करोड़ रुपये राजस्व एकत्र कर रिकार्ड बनाया था। इसको देखते हुए शासन स्तर से वित्त वर्ष 2023-24 में इंदौर परिवहन कार्यालय को 931.26 करोड़ रुपये का राजस्व लक्ष्य दिया गया। इसमें विभाग 865.42 करोड़ रुपये ही जमा कर पाया, जो वित्त वर्ष 2022-23 की अपेक्षा 26 करोड़ रुपये कम है।

इंटरनेट मीडिया पर हिंदू देवी-देवताओं की आपत्तिजनक फोटो

इंदौर। इंटरनेट मीडिया पर हिंदू देवी-देवताओं के आपत्तिजनक फोटो और झूठ परोसने की शिकायत पुलिस कमिश्नर राकेश गुप्ता से हुई है। जिस पेज पर फोटो और कमेंट्स हुए, वह समलैंगिकों के ग्रुप एलजीबीटी को प्रमोट करता है। साइबर सेल और राष्ट्रीय जांच एजेंसी से जांच करवाने की मांग की गई है। इस कृत्य को हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं का अपमान और सौहार्द बिगाड़ने की साजिश बताया है। कानून की छात्रा सपना प्रजापत के मुताबिक, 27 मार्च को इंटरनेट मीडिया का उपयोग करते वक्त फोटो फेसबुक पर वन मैसेज पर फोटो देखे थे। फोटो में भगवान राम, शिव-पार्वती और हनुमानजी को आपत्तिजनक अवस्था में बताया गया है। वन मैसेज पेज समलैंगिकों के समूह को प्रमोट करता है। इसके लाखों फालोअर हैं। फोटो के साथ झूठे और तथ्यहीन कमेंट्स किए गए हैं। शिकायतकर्ता का आरोप है कि धार्मिक भावनाएं भड़काने, सौहार्द बिगाड़ने और आंतरिक शांति समाप्त करने की साजिश है। आगामी दिनों में नववर्ष, चैत्र नवरात्र जैसे त्योहार आने वाले है। ऐसे समय में हिंदू देवी देवताओं के अपमान से देश की शांति व्यवस्था भी प्रभावित हो सकती है। शिकायतकर्ता ने एनआइए से जांच की मांग की है।

इंदौर में आईपीएल मैच पर लग रहा था सट्टा, आठ आरोपित गिरफ्तार

इंदौर क्राइम ब्रांच ने शहर में आईपीएल के मैच पर सट्टा लगाते हुए आठ आरोपितों को गिरफ्तार किया। सट्टा लसूड़िया थाना क्षेत्र की एक बहुमंजिला इमारत में संचालित हो रहा था। पुलिस ने मौके से आरोपितों के यहां से पांच लेपटॉप और करीब एक दर्जन मोबाइल मिले हैं। इसके अलावा पुलिस को कई मैचों के टिकट व आपत्तिजनक कागज भी मिले हैं। पुलिस मामले में पूछताछ कर रही है।

18 हजार अधिकारी-कर्मचारी संभालेंगे लोकसभा चुनाव की जिम्मेदारी

इंदौर। लोकसभा चुनाव की आचार संहिता लागू होने के बाद से ही जिला निर्वाचन कार्यालय द्वारा मतदान की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। इंदौर जिले के नौ विधानसभा क्षेत्रों में 2677 मतदान केंद्रों पर सुविधाएं जुटाने की प्रक्रिया की जा रही है। जिले में चुनावी प्रक्रिया की संपन्न कराने की जिम्मेदारी करीब 18 हजार कर्मचारी संभालेंगे। जिला प्रशासन से सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के अवकाश पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही विभिन्न दलों का गठन किया जा रहा है। सभी दलों को बारी-बारी से प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिले में मतदान दलों के प्रशिक्षण का कार्यक्रम 15 अप्रैल से शुरू होगा। एक दल में पीठासीन अधिकारी सहित चार सदस्यों को नियुक्त किया जाएगा। मतदान दलों के लिए 12 हजार कर्मचारी और अधिकारियों की आवश्यकता होगी। यह दल नेहरू स्टेडियम से सामग्री लेन के साथ ही मतदान केंद्र पहुंचकर मतदान की प्रक्रिया कराने के बाद वापस सामग्री जमा कराएगा। इस दल में शामिल पीठासीन अधिकारी और पी-1 अधिकारी को चार दिन का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसमें ईवीएम, वीवीपेट सहित पूरी मतदान की प्रक्रिया की जानकारी दी जाएगी। इसके बाद पूरे दल का प्रशिक्षण 3 मई से प्रारंभ होगा। इसमें दल के सभी चार सदस्यों को मतदान की प्रक्रिया समझाई जाएगी। जिले में 191 सहायक मतदान केंद्र बनाएं इंदौर जिलें में 2486 मतदान केंद्रों के अतिरिक्त 191 सहायक मतदान केंद्र भी बनाए गए हैं। 1500 से अधिक मतदाता संख्या वाले केंद्रों पर सहायक मतदान केंद्र बनाए गए हैं। यहां मतदाताओं को विभाजित किया जा रहा है। जिले में 2677 मतदान केंद्रों के लिए दलों का गठन किया जा रहा है। सुविधा के लिए 10 प्रतिशत अधिक मतदान दल का गठन किया जाएगा। मौजूद रहेगी स्वास्थ्य विभाग की टीम

गर्मी के मौसम में होने वाले चुनाव को देखते हुए निर्वाचन आयोग ने कर्मचारियों और अधिकारियों की सेहत को लेकर उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। प्रत्येक सेक्टर अधिकारी के साथ स्वास्थ्य विभाग की टीम मौजूद रहेगी। वहीं सभी दलों को प्राथमिक उचार की किट भी उपलब्ध कराई जाएगी। आवश्यकता अनुसार एंबुलेंस और अन्य सुविधाओं को भी पहले से चिन्हित किया जाएगा। जीपीएस से होगी ट्रैकिंग लोकसभा चुनाव के लिए प्रत्येक दल और सेक्टर आफिसर के वाहनों, वीवीपेट और ईवीएम लाने एवं ले जाने वाले वाहनों की जीपीएस ट्रैकिंग से निगरानी होगी। सभी वाहनों में जीपीएस लगाए जा रहे हैं। इसका नोडल अधिकारी संयुक्त कलेक्टर विजय मंडलाई को नियुक्त किया गया है।

सीधी, बालाघाट, शहडोल, जबलपुर, मंडला और छिंदवाड़ा सीटों पर जीत के लिए जोर लगा रहे सभी राजनीतिक दल, शुरू की समीकरण साधने की तैयारी

छह में से एक सीट पर एंटी इनकंबेंसी तो दो पर बागी बने चुनौती

भोपाल। महाकौशल और विंध्य क्षेत्र की छह सीटों पर लोकसभा चुनाव प्रथम चरण में होगा। इसमें सीधी, बालाघाट, शहडोल, जबलपुर, मंडला और छिंदवाड़ा सीटें शामिल हैं। इन सीटों पर सभी राजनीतिक दल जीत के लिए जोर लगा रहे हैं और अपना समीकरण साधने की तैयारी शुरू कर दी है। हालांकि, उनके सामने चुनौती भी कम नहीं है। किसी सीट पर बागी ही खेल बिगाड़ रहे हैं तो किसी सीट पर एंटी इनकंबेंसी चुनौती बन रही है। बालाघाट और सीधी सीट पर बागी प्रत्याशी कांग्रेस और भाजपा प्रत्याशी के लिए परेशानी बन रहे हैं। वहीं, मंडला सीट पर विधानसभा चुनाव हारे केंद्रीय मंत्री और भाजपा प्रत्याशी फग्गन सिंह कुलस्ते को एंटी इनकंबेंसी का सामना करना पड़ रहा है।

बालाघाट संसदीय सीट पर कांग्रेस ने सम्राट सारस्वत को प्रत्याशी बनाया है और भाजपा ने सांसद ढाल सिंह बिसेन का टिकट काट कर भारती पारधी को मौका दिया है। इस सीट पर कांग्रेस के लिए कंकर मुंजारे मुसीबत बन गए हैं। मुंजारे ने कांग्रेस से टिकट नहीं मिलने के बाद बसपा से नामांकन भर दिया है। मुंजारे बालाघाट से कांग्रेस विधायक अनुभा मुंजारे के पति हैं। कंकर मुंजारे बालाघाट से निर्दलीय चुनाव भी जीत चुके हैं। वे तीन बार के विधायक भी रह चुके हैं। भाजपा से बागी बिगाड़ सकते हैं खेल सीधी सीट पर भाजपा ने डॉ. राजेश मिश्रा को प्रत्याशी बनाया है। वहीं, कांग्रेस ने पूर्व मंत्री और कमलेश्वर पटेल को मौका दिया है। यहां पर भाजपा से बागी अजय प्रताप सिंह ने निर्दलीय मैदान में है। वे यहां पर भाजपा का खेल बिगाड़ सकते हैं। राज्यसभा सांसद अजय प्रताप सिंह का कार्यकाल दो अप्रैल 2024 में समाप्त हो गया। उनको दोबारा राज्यसभा नहीं भेजने पर वह सीधी से टिकट की मांग कर रहे थे, लेकिन पार्टी ने उनको टिकट नहीं दिया। इससे नाराज होकर अजय प्रताप सिंह ने कार्यकताओं की अनदेखी का आरोप लगाकर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। अब वह निर्दलीय चुनाव मैदान में है।

आमने-सामने

मंडला संसदीय सीट पर भाजपा ने केंद्रीय मंत्री और सांसद फग्गन सिंह कुलस्ते को प्रत्याशी बनाया है। वह आदिवासियों का बड़ा चेहरा है। वहीं, कांग्रेस ने विधायक ओमकार सिंह मरकाम को प्रत्याशी बनाया है। दोनों 10 साल बाद फिर से आमने-सामने है। इस सीट पर भाजपा के लिए एंटी इनकंबेंसी फैक्टर चुनौती बना हुआ है। फग्गन सिंह कुलस्ते 2009 को छोड़ दें तो लगातार छह बार के सांसद हैं। दरअसल, 2009 में इस सीट पर कांग्रेस के बसोरी सिंह मसराम चुनाव जीते थे। इस चुनाव को छोड़ कुलस्ते लगातार छह चुनाव जीतते आ रहे हैं। उनको पार्टी ने मंडला की निवास सीट से विधानसभा प्रत्याशी बनाया था। हालांकि, वे यह चुनाव कांग्रेस के चैनसिंह वरकड़े से हार गए। ऐसे में फग्गन सिंह कुलस्ते के सामने एंटी इनकंबेंसी बड़ी चुनौती बनी हुई है।

आरोपियों पर यूनिवर्सिटी के 19.48 करोड़ रुपए निजी खातों में ट्रांसफर करने के आरोप

आरजीपीवी के पूर्व कुलपति-कुलसचिव समेत तीन की गिरफ्तारी पर इनाम

भोपाल। गांधी नगर पुलिस ने राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीपीवी) के पूर्व कुलपति-कुलसचिव समेत तीन की गिरफ्तारी पर तीन-तीन हजार रुपए का इनाम घोषित किया है। आरोपियों पर यूनिवर्सिटी की 19.48 करोड़ रुपये की राशि निजी खातों में ट्रांसफर किए जाने के आरोप थे। आरजीपीवी के पूर्व कुलपति प्रो. सुनील कुमार, तत्कालीन रजिस्ट्रार आरएस राजपूत और रिटायर्ड फाइनेंस कंट्रोलर ऋषिकेश वर्मा को भोपाल पुलिस ने भगोड़ा घोषित किया है। पुलिस ने राजीव गांधी प्रौद्योगिकी यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डॉ. मोहन सेन की रिपोर्ट पर पिछले दिनों तत्कालीन कुलपति सुनील कुमार गुप्ता, तत्कालीन कुलसचिव आरएस राजपूत, तत्कालीन वित्त नियंत्रक ऋषिकेश वर्मा के साथ ही कुमार मयंक और दलित संघ सोहागपुर समेत अन्य के खिलाफ धोखाधड़ी की विभिन्न धाराओं और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत केस दर्ज किया था। प्रकरण की जांच के दौरान आरोपी कुमार मयंक को पिछले महीने 22 मार्च को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया था। आरोपी सुनील कुमार, आरएस राजपूत और ऋषिकेश वर्मा के निवास स्थान और अन्य ठिकानों पर दबिश दी गई, लेकिन वह नहीं मिले। पुलिस उपायुक्त जोन क्रमांक-4 ने तीनों आरोपियों की गिरफ्तारी पर तीन-तीन हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। इनाम की राशि बढ़ाने के लिए अतिरिक्त पुलिस आयुक्त नगरीय पुलिस भोपाल के पत्र लिखा गया है। इसके साथ ही आरोपी सुनील कुमार गुप्ता एवं आरएस राजपूत के विरुद्ध लुक आउट नोटिस जारी करने के लिए नियमानुसार पत्र प्रेषित किया गया है। जल्द ही दोनों के खिलाफ लुकआउट नोटिस जारी हो जाएगा। पूर्व कुलपति की अग्रिम जमानत याचिका खारिज इधर, आरजीपीवी के पूर्व कुलपति प्रो. सुनील कुमार की अग्रिम जमानत याचिका को सुनवाई के बाद भोपाल कोर्ट ने खारिज कर दी। उन्होंने कोर्ट में 1 अप्रैल को अग्रिम जमानत याचिका दाखिल की थी। इस पर 2 अप्रैल को सुनवाई के बाद फैसला सुरक्षित रख लिया था। बुधवार को भोपाल कोर्ट ने अग्रिम जमानत याचिका पर पूर्व कुलपति की ओर से दी गई दलीलों को खारिज करते हुए जमानत आवेदन को निरस्त कर दिया। उल्लेखनीय है इससे पहले आरएस राजपूत की अग्रिम जमानत याचिका कोर्ट ने 12 मार्च को सुनवाई के बाद खारिज कर दी थी। कुमार मयंक से 19.48 करोड़ रुपए के उपयोग के बारे में सवाल-जवाब यूनिवर्सिटी में 19.48 करोड़ रुपए की गड़बड़ी मामले में आरोपी बनाए गए बैंक के कर्मचारी कुमार मयंक को गांधी नगर पुलिस ने अहमदाबाद से गिरफ्तार कर लिया है। कुमार मयंक से पुलिस गड़बड़ी में शामिल दूसरे आरोपियों की भूमिका और सरकारी खाते से निजी खाते में ट्रांसफर हुए 19.48 करोड़ रुपए के उपयोग के बारे में सवाल-जवाब कर रही हैं। गांधी नगर पुलिस ने मयंक को तीन दिन की रिमांड पर लिया हुआ है।

मंत्री के बेटे ने मीडिया को दिखाई चोटों की तस्वीर

भोपाल के शाहपुरा थाना क्षेत्र में हुए विवाद का मामला

भोपाल। भोपाल के शाहपुरा थाना क्षेत्र में शनिवार को हुए विवाद के मामले में प्रदेश के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल के बेटे अभिज्ञान ने अपने साथ हुई मारपीट की चोटें मीडिया को दिखाई है। अभिज्ञान का दावा है कि जिन चार पुलिस वालों को निलंबित किया है, उन्होंने उसके साथ मारपीट की थी। अभिज्ञान ने तो मीडिया के सामने कुछ तस्वीरें भी पेश की हैं, जिनमें उसके शरीर पर चोटें दिखाई दे रही हैं। मामला शनिवार का है। भोपाल के शाहपुरा थाना क्षेत्र में त्रिलंगा के रेड लाइन रेस्टोरेंट के बाहर वाहन खड़ा करने को लेकर अभिज्ञान का एक मीडियाकर्मी से विवाद हो गया था। इसके बाद मामला बढ़ा और रेस्टोरेंट के संचालक और उनकी पत्नी भी इस विवाद में शामिल हो गए। मंत्री पुत्र ने पहले दोस्तों के साथ मिलकर मीडियाकर्मी को पीटा। रेस्टोरेंट संचालक आलिशा सक्सेना और उसके पति डेनिस मार्टिन ने बीचबचाव किया तो मंत्री पुत्र के समर्थकों ने उन्हें भी बुरी तरह पीटा। मामला थाने पहुंचा था। और अभिज्ञान के खिलाफ केस भी दर्ज हुआ है। इस दौरान मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल भी शाहपुरा थाना पहुंचे थे। वहां उनकी मौजूदगी की तस्वीरें भी सामने आई थी। मंत्री का थाने में जाकर कई घंटे बैठना पार्टी के नियमों का उल्लंघन मीडिया में मंत्री पुत्र की गुंडागर्दी का मामला आया तो मंत्री को भोपाल से लेकर दिल्ली तक नसीहत मिली। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा से लेकर संगठन महामंत्री हितानंद ने पटेल को बेटे की गुंडागर्दी को लेकर फटकारा भी था। चार पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया तो मामले ने और तूल पकड़ लिया। पार्टी पदाधिकारियों का कहना है कि मंत्री का इस तरह थाने में जाकर कई घंटे बैठना पार्टी के नियमों का उल्लंघन है। इस मामले में मंत्री फिलहाल चुप है।

हमारी दुकान खुली है, खरीद कर ले जाओ : सज्जन सिंह वर्मा

पूर्व मंत्री ने भाजपा के साथ-साथ दलबदल करने वाले नेताओं पर साधा निशाना

भोपाल। लोकसभा चुनाव से पहले प्रदेश में कांग्रेस को लगातार झटके लग रहे हैं, जहां कांग्रेस के तमाम नेता लगातार दलबदल कर भाजपा का दामन थाम रहे हैं। इस बीच पूर्व मंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता सज्जन सिंह वर्मा का बड़ा बयान सामने आया है, जिसमें सज्जन सिंह वर्मा ने बीजेपी के साथ-साथ दलबदल करने वाले नेताओं पर जोरदार निशाना साधा है। कांग्रेस छोड़ बीजेपी का दामन थामने वाले नेताओं इन दिनों सज्जन सिंह वर्मा के निशाने पर हैं, जहां लगातार वर्मा की ओर से दलबदल करने वाले नेता और बीजेपी पर निशाना साधा जा रहा है। वहीं एक बार फिर सज्जन सिंह वर्मा ने बीजेपी की ओर से दलबदल को लेकर चलाए जाने वाले अभियान पर तंज कसते हुए कहा कि, ले जाओ हमारी दुकान तो खुली है, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता।

भाजपा के दलबदल अभियान पर कांग्रेस नेता सज्जन सिंह वर्मा ने कहा कि, ले जाओ, हमारी दुकान तो खुली है। ले जाओ, यहां से खरीद के, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता। दुकान में माल कम नहीं होगा, बढ़ता ही रहेगा। नए-नए प्रोडक्शन आएंगे, दुकान हमारी खुली है, तो खरीदकर ही ले जाएगा। खरीददार तो खरीदकर ही ले जाएगा। इसी के साथ कुछ सीटों पर कांग्रेस प्रत्याशियों के ऐलान रोके जाने के सवाल का जवाब देते हुए सज्जन सिंह वर्मा ने कहा कि, जल्द प्रत्याशियों का ऐलान हो जाएगा। इससे पहले मंत्री कैलाश विजयवर्गीय के 8 लाख वोटों से चुनाव जीतने के सवाल का जवाब देते हुए कांग्रेस नेता सज्जन सिंह वर्मा ने कहा कि, कैलाश जी ने मशीन सेटिंग कर ली होगी, मशीन सेटिंग में तो कलाकार लोग हैं। मानकर चलिए यदि ईमानदारी का चुनाव होगा तो जब सत्यनारायण पटेल चुनाव लड़े थे तब वे मात्र 11000 वोटो से हारे थे, हो सकता है अक्षय बम 25000 वोटो से चुनाव जीत जाए।

इंडी गठबंधन दलों की संयुक्त बैठक 6 अप्रैल को

भोपाल। लोकसभा चुनाव के लिए बने इंडी गठबंधन में शामिल दल मध्य प्रदेश में मिलकर भाजपा के विरुद्ध चुनाव लड़ने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। इसके लिए चर्चा करने को कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने समाजवादी पार्टी, आम आदमी पार्टी, सीपीआई, सीपीआईएम और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रदेश स्तरीय प्रमुख पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक छह अप्रैल को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय भोपाल में बुलाई है। उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश में आम आदमी पार्टी, एनसीपी, सीपीआई, सीपीआईएम ने एक भी प्रत्याशी खड़ा नहीं किया है, जबकि, कांग्रेस ने समझौते के तहत खजुराहो लोकसभा सीट सपा के लिए छोड़ी है। पहले चरण के नामांकन की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है और दूसरे चरण की गुरुवार चार अप्रैल को पूरी हो जाएगी।

सामूहिक नेतृत्व में सभी सहयोगी दल चुनाव में अपनी-अपनी भूमिका किस तरह से निभाएंगे, इसे लेकर संयुक्त बैठक में विचार करके रणनीति बनाई जाएगी। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष के मीडिया सलाहकार केके मिश्रा ने बताया कि गठबंधन के सहयोगियों की प्रदेश में यह पहली संयुक्त बैठक हो रही है। इसमें जो कार्ययोजना तय होगी, उसी आधार पर चुनाव अभियान संचालित किया जाएगा।

10 से 15 अप्रैल के बीच घोषित होगा पांचवीं-आठवीं की बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट

प्रदेशभर के सरकारी व निजी स्कूलों के 25 लाख विद्यार्थियों को है इंतजार

भोपाल। प्रदेश के पांचवीं व आठवीं की बोर्ड परीक्षा का परिणाम 10 से 15 अप्रैल के बीच में घोषित होने की संभावना है। प्रदेश भर के सरकारी व निजी स्कूलों के करीब 25 लाख विद्यार्थी परिणाम के इंतजार में है। यह परिणाम एक अप्रैल को आना था, लेकिन अब तक 70 प्रतिशत उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य पूरा हुआ है। मूल्यांकन कार्य 31 मार्च तक समाप्त करना था। वहीं शिक्षक मूल्यांकन केंद्र नहीं पहुंच रहे हैं। इस कारण उत्तरपुस्तिकाओं को जांचने का काम नहीं पूरा हो पा रहा है। ऐसे में अभी विद्यार्थियों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। राज्य शिक्षा केंद्र ने जो समय-सारिणी तय किया था,उसके हिसाब से अप्रैल के पहले सप्ताह में पांचवीं व आठवीं का परिणाम आना था, लेकिन अब तक 30 प्रतिशत उत्तरपुस्तिकाओं को जांचना है। निजी स्कूलों के अंग्रेजी माध्यम के चार लाख विद्यार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं को जांचने के लिए सरकारी स्कूल में शिक्षक नहीं मिल रहे हैं।इस कारण निजी स्कूलों के शिक्षकों को मूल्यांकन कार्य में लगाया गया है।शिक्षकों ने पिछले साल का मानदेय नहीं मिलने से इस बार की कापियों को जांचने से इंकार कर दिया है। राजधानी के चार मूल्यांकन केंद्रों पर 3200 शिक्षकों को साढ़े पांच लाख से अधिक कापियों को जांचने के लिए लगाया गया है।

राहुल कांग्रेस को खत्म करके मानेंगे : शिवराज

पूर्व सीएम शिवराज बोले- इंडी गठबंधन से देश नहीं चल सकता

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधवार को देवास लोकसभा क्षेत्र से प्रत्याशी महेन्द्र सोलंकी के समर्थन में सीहोर जिले के आष्टा में रोड शो कर कार्यकर्ता सम्मेलन को संबोधित किया। आष्टा में रोड-शो के दौरान जनसैलाब उमड़ पड़ा।

रोड-शो के दौरान बड़े-बुजुर्गों ने शिवराज के सिर पर हाथ रख उन्हें आशीर्वाद दिया तो युवाओं ने उनसे हाथ मिलाकर खुशी जाहिर की। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि, कांग्रेस के जमाने में जब दुनिया के किसी देश में जाते थे तो मान-सम्मान नहीं था, इज्जत नहीं थी, कोई कहता था कि हम भारत से आए हैं तो लोग कहते थे कि वो तो घपलों-घोटालों का देश है। पूर्व मुख्यमंत्री ने एक किस्सा सुनाते हुए कहा कि एक बार नर्मदा जी में बाढ़ आई तो पुजारी जी एक पेड़ पर चढ़ गए, उस पेड़ पर सांप-बिच्छु, कीट-पतंगे, बंदर, लड़ैया, जीव-जंतु सब बैठे थे लेकिन न तो बंदर किसी को काट रहा था, न सांप काट रहा था, सब अपनी-अपनी जगह पर चुपचाप बैठे थे। ऐसे ही मोदी जी के समर्थन की बाढ़ आई तो सांप-बिच्छु बंदर सभी एक पेड़ पर चढ़ गए हैं और इंडी गठबंधन बना लिया है लेकिन ये कितने भी इकट्ठे हो जाए कभी जीत नहीं सकते हैं। भारत मोदी जी के नेतृत्व में विश्व गुरू बनकर रहेगा कोई रोक नहीं सकता है। नरेन्द्र मोदी जी दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता है और भारतीय जनता पार्टी सबसे लोकप्रिय पार्टी है।

कांग्रेस ने भारत की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाई

उन्होंने कहा कि, राहुल बाबा जब तुम्हारी सरकार थी तो तुमने देश को घपलों और घोटालों का देश बना दिया था। कांग्रेस ने भारत को लूट लिया, भारत की प्रतिष्ठा, मान-सम्मान सभी को चोट पहुंचाई। लेकिन प्रधानमंत्री बनने के बाद 2014 में नरेंद्र मोदी जी कहा कि, न खाऊँगा, न खाने दूंगा। आज कई लोग जेल में हैं और कई लोग बेल पर हैं। कांग्रेस के जमाने में भ्रष्टाचार पर कभी कार्रवाई ही नहीं होती थी। क्योंकि कार्रवाई करने वाले ही फर्जी थे।

कांग्रेसी कहते थे तारीख नहीं बताएंगे

पूर्व सीएम ने कहा कि, 500 साल से हम इंतजार कर रहे थे कि, रामलला हम आएंगे, मंदिर वहीं बनाएंगे लेकिन कांग्रेसी कहते थे तारीख नहीं बताएंगे। अब 22 जनवरी को पूरी दुनिया ने देख लिया अयोध्या के दिव्य और भव्य मंदिर में भगवान श्रीराम के मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा हो गई है। पूरा देश खुशियां मना रहा था और कांग्रेसी मातम मना रहे थे। निमंत्रण कांग्रेस को भी दिया गया था, उनको निमंत्रण आया कि आप भी आइए अयोध्या में भगवान श्री राम की प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है, लेकिन उन्होंने कहा कि नहीं जाएंगे। जाको प्रभु दारुण दुख देही, ताकी मति पहले हर लेही। तुम्हारे भाग ही फूटे, करम ही फूटे तो जाओगे कैसे। अब ऐसी का कभी देश का भला कर सकती है क्या..? इसलिए कांग्रेस के अच्छे विचारवान नेता कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो रहे हैं।

धृतराष्ट्री परिवारवाद और सुदामाई परिवारवाद में एक नैतिक जंग...

महाभारत काल में पुत्र मोह में अंधे हुए राजा धृतराष्ट्र और मित्र प्रेम में लाचार हुए सुदामा कभी आपस में मिले थे, इसका कोई पौराणिक जिक्र भले न हो, लेकिन कलियुग में यह भेंट संभव हुई है। न केवल संभव हुई बल्कि इस डायलॉग के साथ हुई कि सुदामा तुम तय कर लो कि तुम्हें सुदामा ही रहना है या फिर धृतराष्ट्र बनना है। इस संवाद में चेतावनी भी है और धमकी भी। चेतावनी इस बात की कि गरीब सुदामा को कभी सम्राट धृतराष्ट्र बनने का ख्वाब नहीं देखना चाहिए और धमकी इस बात की कि अगर तुमने सुदामा की औकात से बाहर निकलने की कोशिश की तो राजनीतिक आख्यानों में भले तुम्हे अमरत्व हासिल हो जाए, लेकिन सियासी जिंदगी में तुम्हारी भ्रूणहत्या भी हो सकती है।

द्वापर युग का यह समूचा संदर्भ (पौराणिक स्रोतों के अनुसार) वर्तमान कलियुग के 5126 वें वर्ष में लोकतांत्रिक भारत में हो रहे 18 वीं लोकसभा चुनाव के पहले चरण में होने वाले छिंदवाड़ा लोकसभा सीट पर चुनाव जीतने के उद्देश्य से दो नेताओं के बीच हुए संवाद का है। संवाद कहने के बजाए उसे एकालाप कहना ज्यादा उचित होगा। मीडिया में आई रिपोर्टों को सही मानें तो जो नैतिक डायलॉग बोला गया वो कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कमलनाथ का था, जो दूसरी बार अपने पुत्र को छिंदवाड़ा से लोकसभा में भेजने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा रहे हैं तो दूसरी तरफ चार दशकों से कमलनाथ के सेवक रहे दीपक सक्सेना हैं, जो आर्थिक रूप से भले ही गब्बर बन गए हों, लेकिन राजनीतिक रूप से सुदामा ही रहे। सुदामा होना केवल आर्थिक असमानता का प्रतिफल ही नहीं है बल्कि ऐसा भाग्यफल भी है, जिसमें लक्ष्मी और सत्ता सुंदरी दोनों गठबंधन कर याचक को ठेंगा दिखाती रहतीं हैं। दीपक सक्सेना नामक पात्र की सियासी ट्रेजेडी यही है कि तमाम वफादारियों के बाद भी उनके हिस्से में दरी उठाने का काम ही आया है। उनका कमलनाथ भक्त होना ही मानो इस राजनीतिक अभिशाप का कारण है। लिहाजा इस चुनाव में उन्होंने कमलनाथ से नाल तोड़कर कमलदल से जोड़ने की जुर्रत की तो बदले में उलाहना मिला कि धृतराष्ट्र बनने की कोशिश भी न करना।

इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि एक हस्तिनापुर में एक ही धृतराष्ट्र रह सकता है। या यूं कहें कि पुत्र मोह पालने का विशेषाधिकार भी उन्हीं को है, जो सत्ता सम्पन्न हैं। सत्ता में जमे हुए हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी जमे रहना चाहते हैं। यह जनता का पुनीत कर्तव्य है कि वह एक पीढ़ी के इन्वेस्टमेंट पर कई नस्लों को राजनीतिक लाभांश देती रहे। राजनेताओं के लिए अपने पुत्र/पुत्री/ पत्नी आदि के सियासी कॅरियर के आगे हर शै बेमानी है। कोई सुदामा अगर उसे चुनौती देने की धृष्टता करेगा भी तो वह आंखों के साथ हाथ- पैरों से भी हाथ धो बैठेगा। यूं तो धृतराष्ट्र और सुदामा की कहानी में कहीं कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। ये सारा ताना बाना उस कूटनीतिज्ञ और भगवान कृष्ण के माध्यम से है, जो धृतराष्ट्र को पुत्र मोह से बचने की समझाइश देते हैं और नाकाम रहते हैं दूसरी तरफ सुदामा को दोस्ती का वास्ता देकर भौतिक आकांक्षाओं को तृप्त करने की कोशिश करते हैं। पुराणों में सुदामा के पिता का तो उल्लेख है कि वो राक्षसराज शंखचूड़ के पुत्र थे। शंखचूड़ को ब्रह्मा से अमरत्व का वरदान था। लेकिन सुदामा के पुत्रों का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। चूंकि सुदामा राजनेता नहीं थे, इसलिए उनके पुत्रो के राजनीतिक और आर्थिक भविष्य की चिंता करने की गरज पुराणकारों को भी महसूस नहीं हुई होगी। ब्राह्मण सुदामा मूलतः उस समाजवादी सोच की उपज थे, जिसमें अमीरी के बजाए गरीबी के समान वितरण पर ज्यादा जोर रहा है। इसका सीधा अर्थ है कि दीपक सक्सेना के भाग्य में सुदामा होना ही बदा है। द्वापर युग में योगीराज कृष्ण ने अपने इस बाल मित्र को दोस्ती की खातिर जो कुछ माल-ताल दे दिया, उसे सुदामा को अपना सौभाग्य समझ कर संतुष्ट रहना चाहिए। इससे ज्यादा की उम्मीद पालना भी अपने आप में राजनीतिक अपराध है। आखिर नौकर, नौकर है और मालिक, मालिक।3 यह सही है कि दीपक सक्सेना कमलनाथ की कृपा से ही चार बार विधायक, एक बार मंत्री और एक बार प्रोटेम स्पीकर बने। लेकिन जब उनके राजनीतिक अरमान उरूज पर थे, तभी उनका पत्ता काट दिया गया। स्वामी की खातिर पद और पावर गंवाने की ऐवज में उन्हें कुछ नहीं मिला। जब छिंदवाड़ा से लोकसभा के लिए किसी को भेजने की बात आई तो कमलनाथ ने अपने पुत्र नकुलनाथ को चुना। गौरतलब है कि राजनीति में सेवा के बदले मेवा मिलने का गणित इस बात पर निर्भर करता है कि आपका स्वामी कौन है, स्वयं धृतराष्ट्र हैं अथवा कृष्ण। बहरहाल, कांग्रेस में अपनी उपेक्षा और स्वामीभक्ति के बदले मिली दुत्कार से दुखी दीपक सक्सेना ने भाजपा में जाने की हिमाकत की, जो उन कमलनाथ को रास नहीं आई, बावजूद इसके कि खुद उनके पुत्र समेत पाला बदलने की सुर्खियां मीडिया में चली थीं। तब भी लक्ष्य एक ही था पुत्र की कुर्सी बचाना। अब भी मकसद वही है। फर्क इतना है कि पुत्र प्रेम का यही पासवर्ड दीपक सक्सेना ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की लिंक ओपन करने के लिए डालना चाहा तो वो कमलनाथ का कोपभाजन बन गए। और तो और कमलनाथ की पुत्रवधु प्रिया नाथ ने भी दीपक पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कमलनाथजी ने जिनकी मदद की, वही अग्नि परीक्षा के वक्त उन्हें छोड़कर जा रहे हैं। उधर लगातार मिल रहे दास ट्रीटमेंट से आहत दीपक ने पहले तो अपने बेटे अजय को भाजपा में भेजा और खुद भी भगवा धारण करने की तैयारी में थे। तभी उन्हें अल्टीमेटम दिया गया कि वो धृतराष्ट्र और सुदामा में से कोई एक ऑप्शन को आप्ट कर लें। यहां दीपक सक्सेना की 'गलती' यही है कि उन्होंने धृतराष्ट्री परिवारवाद के बदले सुदामाई परिवारवाद को खड़ा करने की कोशिश की। चरण वंदन के बदले माथे पर तिलक चंदन मांगा। परिवारवादी राजनीतिक संस्कृति में यही महापाप है। वरना धृतराष्ट्र खुद अपनी निष्प्राण आंखों के साथ पाला बदल लें तो यह राजनीतिक पैंतरा होता है और सेवक अपनी जीवित आंखों के साथ दूसरे का दामन थाम ले तो स्वामीद्रोह कहलाता है। है न गजब थ्योरी! वैसे भी धृतराष्ट्रवादी चिंतन में सत्ता की रेवड़ियां अपनो के अकाउंट में ही ट्रांसफर होती हैं। लोकतंत्र में इसके औचित्य को सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने जिस ढंग से तार्किक जामा पहनाया, वह अनूठा है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा वाले (हालांकि परिवारवाद वहां भी है) हम पर परिवारवादी होने का आरोप लगाते हैं, इसीलिए मैंने इस बार अपने परिवार के लोगो को ही ज्यादा से ज्यादा टिकट दिए हैं। इस धृतराष्ट्रवादी चुनावी एपीसोड में कमलनाथ ने इमोशनल कार्ड का ब्रह्मास्त्र चल दिया है। जिसका एक निशाना खुद दीपक सक्सेना भी हैं। जानकारों का कहना है कि वहां भाजपा की गंगा में कितने ही आयातित नेताओं का शुद्धिकरण हो जाए, लेकिन कमलनाथ का भावनात्मक दांव बीजेपी की तमाम कोशिशों पर भारी पड़ सकता है। भाजपा अपने मिशन- 29 के तहत छिंदवाड़ा में कमलनाथ की नाल हर कीमत पर काटना चाहती है, लेकिन साम-दाम-दंड-भेद के बाद भी छिंदवाड़ा में इस बार चुनाव में 'कमल' नहीं खिल पाया तो मुश्किल कमलनाथ के बजाए कमलदल के कर्णधारों की बढ़ेगी।

कचातिवुः इस विवाद का कोई अंत नहीं..., क्षेत्रीय खींचतान के बीच सबसे पहले राष्ट्रीय हित पर विचार जरूरी

भारत और श्रीलंका के बीच स्थित कचातिवु द्वीप पर मौजूदा चुनाव के दौरान छिड़ी बहस के मुख्य निशाने पर मछुआरे हैं, जो महत्वपूर्ण वोटबैंक हैं। हैरानी की बात नहीं कि राजनीति ने दोनों पड़ोसी देशों के नाजुक रिश्ते और कूटनीति को इस बहस में खींच लिया है। यह भाजपा बनाम कांग्रेस की लड़ाई है। तमिलनाडु में बारी-बारी से राज करने वाली द्रमुक और अन्नाद्रमुक के बीच वास्तव में 1974 के समझौते पर कोई विवाद नहीं है, जिसके तहत कचातिवु श्रीलंका का हिस्सा बन गया। न तो द्रमुक, जो समझौते के समय भी राय की सत्ता में थी और अब भी सत्ता में है, और न ही अन्नाद्रमुक ने, जो अब विपक्ष में है, समझौते पर सवाल उठाया है, लेकिन वे मछुआरों के हितों की रक्षा करना चाहते हैं। अन्नाद्रमुक की ओर से विरोध हो सकता था, लेकिन वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पक्ष में बहस में शामिल नहीं हुई, जिन्होंने इस मुद्दे पर कांग्रेस के खिलाफ हमला बोला था। लगभग 50 साल पहले इंदिरा गांधी की सरकार ने करुणानिधि के नेतृत्व में तमिलनाडु की सरकार से परामर्श करने के बाद इस समझौते पर हस्ताक्षर किया था। अन्नाद्रमुक किसी राष्ट्रीय पार्टी से गठबंधन किए बिना अपने दम पर लोकसभा का चुनाव लड़ रही है। वह यही चाहती है कि उसकी संस्थापक नेता और चार बार की मुख्यमंत्री रह चुकीं जयललिता को मछुआरों के एकमात्र उद्धारकर्ता के रूप में देखा जाए। इस मुद्दे पर फिर से बयानबाजी शुरू हो गई है। अन्नाद्रमुक के महासचिव एडापड्डी के. पलानीस्वामी ने विगत दो अप्रैल को कचातिवु की पुनर्प्राप्ति के लंबित मामले में भाजपा को सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दायर करने की चुनौती दी। इसे जयललिता ने दायर किया था। पलानीस्वामी ने मोदी सरकार को चुनौती दी कि केंद्र सुप्रीम कोर्ट को बताए कि कचातिवु द्वीप को सौंपने के मामले पर पुनर्विचार किया जाएगा। वह जानते हैं कि केंद्र श्रीलंका के साथ ताजा विवाद नहीं चाहता है। इसलिए हमारे पास बहस का तीसरा पक्ष है। मौजूदा बहस तमिलनाडु भाजपा प्रमुख के. अन्नामलाई के एक आरटीआई (सूचना का अधिकार) जवाब को लेकर है। उन्होंने कहा है कि भारत का महत्वपूर्ण टुकड़ा देने से तमिलनाडु के मछुआरे भाइयों और बहनों के लिए परेशानी पैदा हो गई है। एक वीडियो में, उन्होंने श्रीलंका को कचातिवु सौंपने में मिलीभगत के लिए कांग्रेस और द्रमुक पर निशाना साधा। मीडिया के एक वर्ग द्वारा सामने लाए गए नए तथ्यों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए मोदी ने उन्हें आंखें खोलने वाला और चौंकाने वाला बताया और इंदिरा गांधी सरकार पर राष्ट्रीय हितों के खिलाफ काम करने का आरोप लगाया। उनकी पार्टी और गठबंधन के अन्य लोग भी इसमें शामिल हो गए।

प्रधानमंत्री मोदी की बयानबाजी का जवाब देते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पूछा कि क्या मोदी सरकार एक पुराने समझौते और एक ऐसे मुद्दे को फिर से खोलना चाहती है, जो श्रीलंका के साथ संबंधों को खराब कर सकता है। यह बयानबाजी भी है, लेकिन एक चेतावनी भी, क्योंकि कोलंबो में मछुआरे और सरकार, दोनों इस मुद्दे पर काफी संवेदनशील हैं। चुनाव चाहे तमिलनाडु, भारत या श्रीलंका में हो और सत्ता में चाहे जो भी रहे, चुनाव से पहले या बाद में असली मुद्दा दोनों तरफ मछुआरों के मछली पकड़ने का अधिकार है। भारतीय क्षेत्र में मछली उत्पादन तेजी से कम हो रहा है और कई ट्रॉलर चलाने वाले भारतीय मछुआरों पर श्रीलंका तट के करीब पानी में मछली पकड़ने के आरोप लगाए गए हैं। स्वाभाविक रूप से इससे श्रीलंका परेशान है। यह कभी नहीं खत्म होने वाला मुद्दा है। इस क्षेत्र में सदियों से मछली पकड़ने वाले तमिलनाडु के मछुआरे कई बार कचातिवु से आगे श्रीलंकाई पानी में चले जाते हैं और उत्तरी श्रीलंकाई तट के पास मछली पकड़ते हैं। उन्हें श्रीलंकाई नौसेना गिरफ्तार कर लेती है। तमिलनाडु में राजनीतिक दल जब हंगामा करते हैं, तो केंद्र सरकार कूटनीतिक हस्तक्षेप करती है और फिर उन्हें छोड़ा जाता है। साल-दर-साल यह चक्र दोहराया जाता है और इसका कोई अंत नहीं दिखता। तमिलनाडु के राजनेता नियमित रूप से मांग करते हैं कि कचातिवु को श्रीलंका से वापस लिया जाए, क्योंकि भारत ने इसे बिना सोचे-समझे सौंप दिया था। वर्ष 2008 में अन्नाद्रमुक और वर्ष 2013 में द्रमुक ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, लेकिन केवल यह बताया गया कि द्वीप की वर्तमान स्थिति एक समझौता है, जिसे पलटा नहीं जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन में विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि तमिलनाडु की सरकारें केंद्र सरकार से शिकायतें करती रही हैं। यह मुद्दा मूलतः मछुआरों का है। उन्होंने कहा कि श्रीलंका ने 6,184 मछुआरों और 1,175 नावों को हिरासत में लिया है। यह सच है, लेकिन ऐसा पहली बार नहीं हुआ है और न ही इसके खत्म होने की संभावना है। इसमें किसी देश की संप्रभुता नहीं, बल्कि मछली पकड़ने का अधिकार शामिल है। यह ध्यान देना जरूरी है कि गुजरात के मछुआरों का पाकिस्तान के साथ विवाद है और पश्चिम बंगाल एवं ओडिशा के मछुआरों का बांग्लादेश के साथ। गुजरात में सौराष्ट्र एवं कछ के सैकड़ों लोगों को पाकिस्तान के जल क्षेत्र में जाने के लिए हिरासत में लिया गया है और हजारों पाकिस्तानी भी भारतीय जेलों में तब तक के लिए बंद हैं, जब तक कि उनके मामले कूटनीतिक रूप से और दोनों देशों की अदालतों द्वारा हल नहीं हो जाते। तमिलनाडु में यह मुद्दा क्यों चर्चा में है, सिवाय इसके कि अभी लोकसभा के चुनाव हैं? यह मुद्दा मछुआरों के अधिकारों और वोट व सत्ता के लिए होड़ करने वाली दो द्रविड़ पार्टियों के बीच राजनीतिक बयानबाजी तक ही सीमित है। वर्ष 2009 में जातीय हिंसा खत्म होने के बाद से श्रीलंका के साथ भारत के रिश्ते धीरे-धीरे सुधरे हैं। क्या कचातिवु का मुद्दा इस रिश्ते को बिगाड़ने वाला है? सबसे महत्वपूर्ण बात है कि चीन पूरे दक्षिण एशिया में भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है। इस पूरे क्षेत्र में खींचतान को देखते हुए हमें सोचना होगा कि क्या इस तरह के घरेलू और चुनावी मुद्दे हमारे राष्ट्रीय हित में हैं!

शिक्षा जगतः कोचिंग राष्ट्र बनने की दिशा में देश, नौकरियों को पुनर्जीवित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देना जरूरी

शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2023, ग्रामीण भारत के 14 से 18 वर्ष की आयु के युवाओं के बीच शिक्षा के निराशाजनक परिदृश्य पर रोशनी डालती है। पढ़ने के कौशल में आठवीं कक्षा के 30 फीसदी ग्रामीण छात्र दूसरी कक्षा के मानक पाठ नहीं पढ़ सकते। इसी तरह अंकगणित कौशल में आठवीं कक्षा के 55 फीसदी ग्रामीण छात्र बुनियादी भाग करने में असमर्थ थे। जबकि अंग्रेजी समझ एवं कौशल में, आठवीं कक्षा के आधे ग्रामीण छात्र आसान वाक्यों को पढ़ने में असमर्थ थे और जो पढ़ सकते थे, उनमें से लगभग एक तिहाई छात्र अर्थ बताने में असमर्थ थे। स्कूली शिक्षा में सीखने के अपर्याप्त परिणामों को देखते हुए समकालीन भारत में कोचिंग संस्थानों का विस्तार होना स्वाभाविक है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट 2022 ने बताया कि कक्षा एक से आठवीं तक के 30.5 फीसदी ग्रामीण छात्र सशुल्क निजी कोचिंग कक्षाएं ले रहे थे। स्कूली शिक्षा में मूलभूत कौशल और गहन सोच कौशल की कमी के कारण निजी कोचिंग पर निर्भरता जरूरी हो गई है। जैसे-जैसे छात्र उच्च शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, कोचिंग पर निर्भरता बढ़ती जाती है। भारत एक कोचिंग राष्ट्र में बदल गया है, न केवल महानगरीय शहरों में, बल्कि छोटे शहरों में भी। सरकारी नौकरियों की इच्छा, जो सामाजिक सुरक्षा के साथ आती है, शायद ग्रामीण छात्रों को आगे बढ़ने के लिए यही एकमात्र रास्ता हो। भारत के 91 फीसदी कार्यबल अनौपचारिक रोजगार में है, जिसे सामाजिक बीमा के बिना रोजगार के रूप में परिभाषित किया गया है, अर्थात वृद्धावस्था पेंशन, मृत्यु/विकलांगता बीमा, स्वास्थ्य और मातृत्व लाभ इत्यादि से वंचित रोजगार। वर्ष 2022-23 में स्नातकों के लिए बेरोजगारी दर 13.4 फीसदी और स्नातकोत्तर और उससे ऊपर के लोगों के लिए 12.1 फीसदी रही, जो राष्ट्रीय औसत बेरोजगारी दर 3.2 फीसदी (15 वर्ष और उससे अधिक आयु) से लगभग चार गुना है। भारत में बेरोजगारी की स्थिति एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा बनी हुई है। अगर नौकरियां नहीं मिलेंगी, तो छात्र कहां जाएंगे? वर्ष 2017-18 से 2022-23 की अवधि में कृषि क्षेत्र में छह करोड़ श्रमिकों की वृद्धि हुई है! आखिरी पीएलएफएस जुलाई, 2022 और जून, 2023 के बीच भी 80 लाख श्रमिकों को कृषि में जोड़ा गया था। निजी नौकरियों में रोजगार की अनिश्चितता को देखते हुए यह उनकी मजबूरी ही थी। अधिकांश सरकारी नौकरियों के लिए भी परीक्षा में अंग्रेजी कौशल मुख्य घटकों में से एक है। जबकि आबादी की मुख्य भाषा और स्कूली शिक्षा का माध्यम हिंदी बनी हुई है। प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अंग्रेजी कौशल की आवश्यकता होती है, जिसके लिए कोचिंग अपरिहार्य हो जाती है। माता-पिता की उम्मीदें ऊंची बनी हुई हैं और उम्मीदवारों को प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। सफलता और विफलता को परिभाषित करने में कोचिंग एक महत्वपूर्ण कारक साबित हो सकती है। सभ्य गैर-कृषि रोजगार की अनुपलब्धता, रुकी हुई सरकारी नौकरियां और सीमित सरकारी नौकरियों के साथ-साथ उच्च शिक्षा के लिए युवाओं के बीच अभूतपूर्व प्रतिस्पर्धा है, जिसने छात्रों को ट्यूशन और कोचिंग में धकेल दिया है। कुल मिलाकर, शिक्षा का मौलिक अधिकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अधिकार में तब्दील नहीं हुआ है, इसलिए निजी ट्यूशन और कोचिंग संस्थान तेजी से बढ़ रहे हैं।

कोचिंग संस्थान लंबे समय तक एक अनियमित बाजार बने रहे, और कई शिकायतों और छात्रों की आत्महत्याओं के बाद ही सरकार कोचिंग सेंटरों को संचालित करने के लिए दिशा-निर्देश लेकर आई है। 'कोचिंग सेंटर का पंजीकरण और विनियमन, 2024' दिशा-निर्देश कोचिंग सेंटरों को भ्रामक वादे करने या सफलता की गारंटी देने से रोकते हैं।

हालांकि, इसका उपाय स्कूली शिक्षा, उच्च अध्ययन और प्रतियोगी परीक्षाओं की नींव में सीखने के परिणामों में सुधार करना है। इसके अलावा, हर कोई कोचिंग का खर्च नहीं उठा सकता और सरकारी नौकरी की आकांक्षा नहीं कर सकता। गैर-औद्योगिकीकरण और संरचनात्मक परिवर्तन के उलट होने की स्थिति में जो कुछ बचा है, वह है गिग इकनॉमी, जो बिना किसी सामाजिक सुरक्षा जाल के कार्यबल को केवल निर्वाह प्रदान करती है। इस प्रकार, समकालीन भारत में नौकरियों को पुनर्जीवित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा के नामांकन में केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रदेश लोकसभा चुनाव प्रभारी ने पन्ना में रोड शो कर जनसभा को किया संबोधित

जमाना है वंदे भारत का, कांग्रेस खजुराहो में साइकिल पर चल रही है

विपक्षी गठबंधन एक-दूसरे के समर्थन के लिए, हम जनता के उत्थान को समर्पित हैं - श्रीमती स्मृति ईरांनी

कांग्रेसी नहीं चाहती कि बुंदेलखंड के लोगों की जिंदगी में सुख का सूरज आए

खजुराहो में कांग्रेस मैदान छोड़ चुकी है, समाजवादी पार्टी को उम्मीदवार नहीं मिल रहे - डॉ. मोहन यादव

श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने जीत का इतिहास बनाएं

जो प्रत्याशी तय नहीं कर पा रहे है वे जनता का हित क्या तय करेंगे - श्री विष्णुदत्त शर्मा

पन्ना, 03/04/2024। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरा देश अबकी बार 400 पार का रास्ता देख रहा है। खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में तो कांग्रेस पार्टी ने मैदान छोड़ दिया है, समाजवादी पार्टी को उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं। उत्तर प्रदेश से प्रत्याशी लेकर समाजवादी पार्टी आई, फिर दो दिन बाद ही प्रत्याशी बदल दिया। मैं उस क्षेत्र से सांसद हूं जहां पर पांच दशक तक एक खानदान का ही राज रहा है। उस क्षेत्र में कभी भारतीय जनता पार्टी का पटका पहनना मौत का सामान घर लाने जैसा था। माथे पर तिलक लगाना, होंठों पर राम का नाम होना राजनीतिक अभिशाप माना जाता था। उस क्षेत्र में कांग्रेस का हाथ तो था ही, संग संग साइकिल भी चलती थीं। लेकिन भाजपा के कार्यकर्ताओं ने हाथ को साफ किया और साइकिल को पंचर कर दिया। यह जमाना है वंदे भारत का, लेकिन वह आज भी साइकिल पर चलते हैं। आप ने पिछला चुनाव जिताकर जिस कमल के पुष्प को दिल्ली भेजा था, आज वह स्वर्ण कमल का फूल बनकर आपकी सेवा में सदैव तत्पर है। यह बात केंद्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, लोकसभा चुनाव के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने पन्ना में रोड शो एवं जनसभा को संबोधित करते हुए कही। सभा को प्रदेश शासन के मंत्री श्री प्रहलाद पटेल, श्री लखन पटेल, श्री दिलीप अहिरवार, वरिष्ठ नेता श्री सुरेश पचौरी एवं पूर्व मंत्री व विधायक श्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री राजेश वर्मा ने भी संबोधित किया। प्रदेश अध्यक्ष ने किया नामांकन दाखिल

जनसभा के पश्चात रोड शो के रूप में जनता का अभिवादन करते हुए नजरबाग ग्राउंड से कोतवाली चौराहा, बलदाऊ मंदिर, अजयगढ चौराहा से पन्ना कलेक्ट्रेट कार्यालय तक रोड शो में शामिल करते हुए जनता का अभिवादन किया। श्री शर्मा ने पार्टी प्रत्याशी के रूप में पन्ना कलेक्टर कार्यालय में अपना नामांकन दाखिल किया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी, प्रदेश शासन के मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, पूर्व मंत्री व विधायक श्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह एवं श्री संजय पाठक उपस्थित रहे।

जनता का विश्वास भाजपा की ताकत- श्रीमती स्मृति ईरानी

जनसभा को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने कहा कि यह कर्मठ कार्यकर्ताओं के संकल्प और संगठन कौशल का ही परिणाम है कि विरोधी पार्टी ने हथियार डालकर, टिकट बदलकर भाजपा की जीत का संकेत दे दिया है। उन्होंने कहा कि मैं पार्टी प्रत्याशी और प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा को उनकी जीत की अग्रिम बधाई दे रही हूं और यह कोई दुस्साहस या अहंकार नहीं है। उन्होंने कहा कि जनता ने हमारी सेवा को देखा, जाना, परखा और फिर से हम पर विश्वास किया। यह मध्यप्रदेश के पार्टी संगठन और कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी ताकत है। आज मैं इसी ताकत को नमन करने आई हूं। श्रीमती ईरानी ने कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस की हार का सबसे पहला संकेत यह है कि उन्होंने हमारी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष के सामने चुनाव लड़ने से इंकार कर दिया। दूसरा संकेत यह है कि विधानसभा चुनाव में जो दल एक-दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहाते थे, वो सीटों का तालमेल कर रहे हैं।

विपक्ष को इंजेक्शन लगाना है, मोदी जी को फिर प्रधानमंत्री बनाना है

श्रीमती ईरानी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी जिसके कभी सिर्फ दो सांसद हुआ करते थे, आज उसका कार्यकर्ता अबकी बार 400 पार का नारा लगाने की क्षमता रखता है। सिर ऊंचा करके विनम्रता के भाव के साथ वोट मांगता है। उन्होंने कहा कि मैं जनता से यह कहना चाहती हूं कि सपा को वोट देना मतलब उन ताकतों को वोट देना है, जो देश के टुकड़े करना चाहती हैं। इसका मतलब उन्हें वोट देना है, जो देश की तिजौरी को लूट चुके हैं और आज भी जिनकी नजर तिजौरी पर है। हमें जनता को बताना है कि कोविड संकट के समय जब हर तरफ मौत मंडरा रही थी और सारे विरोधी दलों के लोग भाग गए थे, तब भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता घर-घर, गांव-गांव जाकर सैनिटाइजर और मास्क बांट रहा था। हर गली में भूखे को खाना खिला रहा था। उस संकट के दौर में इतना विश्वास सिर्फ मोदी जी के मन में ही था कि हम वैक्सीन बनाएंगे, हर हिंदुस्तानी तक पहुंचाएंगे और विदेशों में भी हिंदुस्तानी वेक्सीन का जौहर दिखाएंगे। उस समय कांग्रेस और सपा के

लोग वेक्सीन का मजाक उड़ा रहे थे, जनता को वेक्सीन लगवाने से रोक रहे थे। अगर लुटेरों के हाथ में बागडोर होती, तो क्या हर गरीब को मुफ्त राशन मिलता?

श्रीमती ईरानी ने कहा कि जब आप जनता से आशीर्वाद मांगने जाएं, तो उनसे यह पूछें कि अगर मोदी जी देश के प्रधानसेवक नहीं होते और देश की बागडोर कांग्रेस के हाथ में होती, तो क्या गरीबों तक मुफ्त राशन पहुंच पाता? अगर मोदी जी नहीं होते, तो क्या हर गरीब का बैंक का खाता खुलता? अगर नरेंद्र मोदी जी नहीं होते, तो क्या भव्य राम मंदिर का निर्माण हो पाता? देश की सुरक्षा, महिलाओं का उत्थान, युवा शक्ति को उज्जवल भविष्य और भारत को विकसित भारत बनाने के लिए भाजपा को वोट दें। कांग्रेस की राजनीति की इतनी दुर्गति हो गई है कि वो चुनाव जीतने के लिए आतंकवादी संगठनों से समर्थन मांग रही है। ये वो लोग जो कहते थे कि धारा 370 हटेगी, तो देश टूट जाएगा। ये वो लोग हैं, जो हमारी सेना के शौर्य के प्रमाण मांगते हैं। ये वो लोग हैं जो सत्ता के लिए देशवासियों को यह धमकी देते हैं कि अगर मोदी जी फिर से प्रधानमंत्री बन गए, तो देश में आग लग जाएगी। मैं राहुल गांधी से यह कहना चाहती हूं कि कान खोलकर सुन लो, इस देश को पहले गोरों ने ललकारा था, देश ने उन्हें धूल चटा दी। जिस दुश्मन ने देश को ललकारा, उसे इस देश ने धूल चटा दी। अगर तुमने इस देश को ललकारा, तो देश तुम्हें छोड़ेगा नहीं।

कांग्रेसी नहीं चाहती कि बुंदेलखंड के लोगों की जिंदगी में सुख का सूरज आए- डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रोड शो के दौरान कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरा देश अबकी बार 400 पार का रास्ता देख रहा है। खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में तो कांग्रेस पार्टी ने मैदान छोड़ दिया है, समाजवादी पार्टी को उम्मीदवार नहीं मिल रहे हैं। उत्तर प्रदेश से प्रत्याशी लेकर समाजवादी पार्टी आई, फिर दो दिन बाद ही प्रत्याशी बदल दिया। खजुराहो लोकसभा सीट में हमारी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा चुनाव मैदान में हैं। विधानसभा के चुनाव में आप लोगों ने खजुराहो लोकसभा क्षेत्र की सभी आठों विधानसभा क्षेत्रों में भाजपा को जिताकर विरोधियों के छक्के छुड़ाते हुए प्रदेश में 163 कमल का फूल खिलाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के लोग नहीं चाहते कि बुंदेलखंड में हरियाली आए, बुंदेलखंड की आय बढ़े। बुंदेलखंड के किसानों की गरीबों की मजदूरों की जिंदगी में प्रधानमंत्री श्री मोदी जी सुख का सूरज बनकर आए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पूरा देश लोकसभा में भाजपा को ऐतिहासिक बहुमत से चुनाव जिताने जा रहा है। कांग्रेस नेता पहले बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे, अब उनके एक नेता पदयात्रा कर रहे हैं। पूरे बुंदेलखंड के अंदर जीवन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकास की बहार लाकर लोगों के जीवन को सुगम बनाया है।

सनातन को आगे ले जाने के लिए मथुरा की ओर जाना पड़ेगा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नेतृत्व में देश में सनातन संस्कृति की जय-जयकार हो रही है। उज्जैन में महाकाल महालोक बन गया है, काशी में विश्वनाथ कॉरिडोर बनकर तैयार हो गया है। अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर बनकर तैयार है और प्रभु श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा भी हो चुकी है। अब सनातन को और आगे ले जाने के लिए मथुरा की ओर जाना पड़ेगा। दुनिया में अगर किसी को जीवन जीने की ललक सीखनी है तो वह बुंदेलखंड आए। प्रधानमंत्री जी ने बुंदेलखंड के लिए केन-बेतवा लिंक परियोजना की सौगात दी है, जो इस क्षेत्र की जनता के लिए वरदान साबित होगी।

कांग्रेस पार्टी में नकली राजा-महाराजा, हमारी पार्टी में सब कार्यकर्तामुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि देश के आजाद होने के बाद राजा-महाराजा तो बचे नहीं। कांग्रेस पार्टी में नकली राजा-महाराजा हैं, हमारी पार्टी में सभी कार्यकर्ता होते हैं। अगर भाजपा को समझना है तो भारत माता की जय बोल देते हैं तो सब समझ जाते हैं। भाजपा गरीबों, किसानों, युवाओं सहित सभी समाज वर्ग का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासनकाल में सीमाओं पर देश के जवानों की इज्जत नहीं होती थी। जब देखो तब पड़ोसी देश हमारे देश और जवानों पर हमला कर चले जाते थे। लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से देश के जवानों का सम्मान बढ़ा है, दो-दो बार दुश्मन देश में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक कर सबक सिखाया है।

मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने हर बूथ पर 370 नए वोट बढ़ाना है- श्री विष्णुदत्त शर्माजनसभा को संबोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कहा कि मुझे पिछले लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए सिर्फ 12 दिन का समय मिला था। लेकिन खजुराहो लोकसभा क्षेत्र के देवतुल्य कार्यकर्ताओं की अथम मेहनत से करीब पांच लाख वोटों से पार्टी को जीत मिली। आपने पिछला चुनाव जिताकर जिस कमल के पुष्प को दिल्ली भेजा था, आज वह स्वर्ण कमल का फूल बनकर आपकी सेवा में सदैव तत्पर है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश का लगातार विकास हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश को विकसित बनाने के साथ भारत को विश्व गुरू बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। पार्टी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के मार्गदर्शन और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के कुशल रणनीति से देश और प्रदेश के हर बूथ पर चुनाव जीतकर ऐतिहासिक बहुमत से श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाना है। श्री मोदी जी को तीसरी बार ऐतिहासिक बहुमत से प्रधानमंत्री बनाने के लिए अबकी बार 400 पार के लक्ष्य को प्राप्त करना है, इसके लिए हमें हर बूथ पर 370 नए मतदाता पार्टी से जोड़ना है। हर बूथ पर 370 नए वोट पार्टी में जोड़कर हमें खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में जीत का इतिहास बनाना है। भाजपा में प्रत्याशी के साथ कार्यकर्ता बूथ-बूथ पर चुनाव लड़ता है, लेकिन यह चुनाव कई मामलों में बहुत अलग है। इस लोकसभा चुनाव में तो भारत की जनता ही श्री नरेन्द मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा की तरफ से चुनाव लड़ रही है। कांग्रेस पार्टी पहले मैदान छोड चुकी है, समाजवादी पार्टी यहां प्रत्याशी तय नहीं कर पा रही है। पहले उत्तरप्रदेश से लोकर प्रत्याशी दिया फिर बदला। जो प्रत्याशी नहीं तय कर पा रहे वे बुन्देलखण्ड और खजुराहो की जनता का क्या भला करेंगे। आप सभी जनता जनार्दन भाजपा को वोट देकर श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथ को मजबूत बनाएं। भाजपा ही देश का विकास कर सकती है, दूसरे दल खुद का विकास करते हैं-डॉ. महेन्द्र सिंह लोकसभा चुनाव के प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह ने रोड शो में कहा कि भारत में भारतीय जनता पार्टी ही एक मात्र राजनीतिक दल है जो देश का विकास करती है। बाकी राजनीतिक दल खुद का विकास करते हैं। कांग्रेस पार्टी ने देश में वर्षों तक शासन किया, लेकिन उसने देश की गरीबी हटाने और गरीबों का कल्याण करने के लिए कोई कार्य नहीं किया। गरीबों, किसानों, युवाओं और समाज के हर जाति वर्ग के विकास और कल्याण की चिंता अगर किसी ने की है तो भाजपा सरकार ने ही किया है। 2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश की विकास को गति मिली। आज देश विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। श्री नरेन्द्र मोदी जी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा। कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों ने अपने विकास किया। कई नेताओं तो खुद के परिवार का विकास करने के लिए राजनीतिक का गठन कर लिया और राजनीति में परिवाद को जन्म दिया।

मोदी जी के दस वर्ष के कार्यकाल में जो विकास हुआ वह कभी नहीं हुआ-श्री प्रहलाद पटेल जनसभा को संबोधित करते हुए प्रदेश शासन के मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा यहां से पार्टी प्रत्याशी हैं, उन पर पूरे मध्यप्रदेश के पार्टी प्रत्याशियों को जिताने की जिम्मेदारी है। इसलिए आप सभी कार्यकर्ता और खजुराहो लोकसभा की देवतुल्य जनता भाजपा का प्रत्याशी बनकर गांव-गांव, घर-घर संपर्क करें और श्री विष्णुदत्त शर्मा को ऐतिहासिक मतों से विजयी बनाएं। श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि विकास का रास्ता बुंदेलखंड से निकलता है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दस वर्ष के कार्यकाल में जितने विकास और उल्लेखनीय कार्य हुए हैं, उतना आजादी के बाद की किसी भी सरकार ने कार्य नहीं किए। भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा का आमंत्रण ठुकराने वालों को क्या सजा मिलनी चाहिए, यह बुंदेलखंड की जनता तय करे। उन्होंने कहा कि आप सभी लोग खजुराहो लोकसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी श्री विष्णुदत्त शर्मा बनकर प्रचार करें और चुनाव कार्य संभालें। आप सभी श्री नरेन्द्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा को ऐतिहासिक विजय दिलाएं।

जनसभा को संबोधित करते हुए पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री सुरेश पचौरी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने दस वर्ष के कार्यकाल में सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करते हुए देश का विकास किया है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से पार्टी के प्रत्याशी श्री विष्णुदत्त शर्मा ने इस क्षेत्र के विकास के लिए प्रशंसनीय कार्य किए हैं। आप लोग श्री नरेन्द्र मोदी जी को फिर से प्रधानमंत्री बनाने के लिए भाजपा को वोट दें।

इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मुकेश सिंह चतुर्वेदी, प्रदेश उपाध्यक्ष व विधायक श्रीमती ललिता यादव, पूर्व संगठन मंत्री श्री दिनेश शर्मा, पूर्व मंत्री व विधायक श्री संजय पाठक, महापौर श्री योगेश ताम्रकार, प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री आशीष अग्रवाल, छतरपुर जिला अध्यक्ष श्री चंद्रभान सिंह गौतम, पन्ना जिला अध्यक्ष श्री बृजेंद्र मिश्रा, विधायक श्री अरविंद पटेरिया, श्री प्रहलाद लोधी, श्री अभिलाष पांडे, श्री प्रणव पांडे, पूर्व विधायक श्रीमती रेखा यादव, पूर्व विधायक श्री उमेश शुक्ला, जिला पंचायत पन्ना अध्यक्ष श्रीमती मीना राज, श्री संजय नागयाच, प्रदेश सह मीडिया प्रभारी श्री आशीष तिवारी उपस्थित थे।

चुनाव का पर्व- देश का गर्व लोकसभा निर्वाचन- 2024

लोकसभा आम निर्वाचन में मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर गुना के निर्देशानुसार नगर पालिका परिषद गुना द्वारा मतदाता जागरूकता गतिविधि आयोजित की गई। लोकसभा निर्वाचन- 2024 में ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं की सहभागिता हो, जिले में मतदाता जागरूकता अभियान के तहत आम जन को नैतिक मतदान करने और अन्य मतदाताओं जागरूक करने हेतु

मुख्य नगर पालिका अधिकारी तेज सिंह यादव द्वारा लाल परेड ग्राउंड पर गौरव फिजिकल अकैडमी के प्रशिक्षणार्थियों,परेड़ पर प्रातः घूमने एवं शारीरिक व्यायाम करने आने वाले युवाओं को मतदाता के लिए जागरूक किया गया। तेज सिंह यादव द्वारा मतदान करने के लिए शपथ दिलाई गई तथा आगामी 7 मई को अधिक से अधिक मतदान कराने की अपील की। नगर पालिका टीम स्वच्छता नोडल अधिकारी बृजभूषण गुप्ता ,शकील खान, अमित आर्य व नगर पालिका परिषद गुना की सहयोगी संस्था सिद्धि विनायक बेस्ट मैनेजमेंट टीम लीडर हेमंत बैरागी व पूरी टीम मौजूद रही।

सहायक आयुक्त का चारोलीपाडा,छोटी गोला और ढेकलबडी में औचक निरीक्षण

झाबुआ ।कलेक्टर नेहा मीना के निर्देशानुसार सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग श्रीमती निशा मेहरा द्वारा 03 अप्रैल 2024 को दोपहर पश्चात् शास. प्रा.वि. चारोलीपाडा तथा मा.वि.चारोली पाडा वि.ख. झाबुआ का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान प्रा.वि.चारोलीपाड़ा में 4 शिक्षक में से एक शिक्षक श्री अजय मुवेल अनुपस्थित पाये गये तथा 03 शिक्षक उपस्थित पाये गये। किंतु कोई भी छात्र उपस्थित नहीं पाया गया। शिक्षक से चर्चा करने पर बताया गया की पास के गांव में शादी में जाना बताया गया। शिक्षक अनुपस्थित होने पर कारण बताओं सूचना पत्र जारी करने के निर्देश दिये गये। मा.वि.चारोलीपाड़ा संस्था में 5 शिक्षक उपस्थिति रजिस्टर में दर्ज पाये गये जिसमें 02 शिक्षक अनुपस्थित पाये गये। चर्चा करने पर पाया गया कि स्कूल रिजल्ट को लेकर गये है। कोई भी छात्र उपस्थित नहीं पाया गया। अनुपस्थित शिक्षक को कारण बताओं सूचना पत्र जारी किये जाने के निर्देश दिये गये। प्रा.वि. छोटी गोला संस्था का निरीक्षण किया गया जिसमें सभी शिक्षक तथा छात्र भी उपस्थित थे। उमावि ढेकलबडी का निरीक्षण किया गया। संस्था में प्राचार्य एवं 3 शिक्षक उपस्थित तथा अन्य सभी शिक्षक अनुपस्थित पाये गये और छात्रों की उपस्थिति भी बहुत कम पायी गई ।विद्यालय के प्राचार्य और अनुपस्थित कर्मचारियों को कारण बताओं सूचना पत्र जारी करने के निर्देश दिये गये।

अनुविभागीय अधिकारी मेघनगर द्वारा नवीन मतदाताओं का पुष्पमाला पहना कर स्वागत किया

झाबुआ ।कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नेहा मीना के निर्देशन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री जितेन्द्रसिंह चौहान (जिला नोडल स्वीप) के मार्गदर्शन में मतदान केंद्र क्रमांक 270 मेघनगर और 274 मेघनगर में विधानसभा निर्वाचन 2023 के तहत जिन मतदान केंद्रों में 75त्न से कम मतदान हुआ के अंर्तगत मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूकता अभियान चला कर स्वीप प्लान के तहत अधिक से अधिक मतदाताओं को लोकसभा निर्वाचन 2024 में मतदान करने हेतु प्रेरित किया गया ।उक्त जागरूकता अभियान के अंर्तगत नवीन मतदाताओं का अनुविभागीय अधिकारी राजस्व मेघनगर श्री मुकेश सोनी द्वारा पुष्प माला पहना कर स्वागत किया गया एवं अपने मताधिकार के महत्व को समझाया गया । सभी मतदाताओं में मतदान के प्रति उत्साह नजर आया । अंत मे अनुविभागीय अधिकारी महोदय द्वारा सभी मतदाताओं को मतदान को शपथ दिलवाई गई मतदाता जागरूकता हेतु नारे लगवाए गए। इस दौरान तहसीलदार मेघनगर श्री विजेंद्रसिंह कटारे, नायब तहसीलदार श्रीमती मृदुला सचवानी , अन्य अधिकारी कर्मचारी और आमजन उपस्थित रहे।

191 अलीराजपुर सेक्टर अधिकारियों की बैठक आयोजित की

अलीराजपुर । सहायक रिटर्निंग अधिकारी एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री तपीस पांडे ने 191 अलीराजपुर विधानसभा क्षेत्र के सेक्टर अधिकारी पुलिस एवं राजस्व की लोकसभा निर्वाचन 2024 के संबंध में बैठक आयोजित की । इस बैठक में उन्होने समस्त सेक्टर अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि अलीराजपुर विधानसभा क्षेत्र में क्रिटिकल एवं वल्नरेबल मतदान केंद्रों को चिन्हित कर सुरक्षा से संबंधित व रूट चार्ट तैयार करने के संबंध में दिशा निर्देश दिए गए । साथ ही उन्होने मतदान केन्द्र पर मतदाताओं को अधिक से अधिक मतदान करने को प्रेरित करने के निर्देश दिए एवं संबंधित अधिकारियों को मतदान केन्द्र पर मुलभूत सुविधा सुलभ कराने के भी निर्देश दिए।

आगजनी से पीड़ित परिवार के लिए आर्थिक सहायता स्वीकृत

अलीराजपुर । कलेक्टर डॉ अभय अरविंद बेडेकर ने बताया कि तहसील जोबट के ग्राम उमरी की निवासी श्रीमती रायुकू पति मुकेश वास्केल कुछ अज्ञात व्यक्ति द्वारा आपसी रंजिश के कारण संबंधित का घर जला दिये जाने की सूचना प्राप्त हुई थी । पीडित परिवार की आर्थिक स्थिति को देखकर जिला प्रशासन द्वारा रेडक्रॉस के माध्यम से संबंधित को बीस हजार की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई और साथ ही जिला पुलिस प्रशासन को निर्देश दिए गए है कि उक्त प्रकरण की जांच कर संबंधित आरोपी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करे।

पुलिस ने चेकिंग के दौरान 44 किलो चांदी और लाखो नकदी जप्त किए

झाबुआ। जिले में पुलिस अभी तक चेकिंग के दौरान अवैध शराब के वाहनों की धड़ पकड़ कर रही थी, लेकिन अब पुलिस ने अवैध शराब के बाद चांदी व नगदी पकड़ने में भी सफलता प्राप्त की है। बताया जाता है कि दिन के उजाले में जो काम नहीं होता वह रात के अंधेरे में आसानी से हो जाता है, पुलिस भी चाक चौबंद रहते हुए जगह-जगह मुस्तैद होकर अपनी पैनी निगाह गढ़ाये बैठी है, जिसके परिणाम स्वरूप् मंगलवार रात्रि में चेकिंग अभियान के दौरान पुलिस को 44 किलो चांदी को लाखों की नकदी पकड़ने में सफलता प्राप्त हुई है। बताया जाता है कि चांदी लाखों रुपए की है जो कार से परिवहन कर ले जा रहे थे। बताया गया कि 31 लाख 24 हजार की 44 किलो चांदी और 13 लाख 39 हजार 115 रुपए नकदी पुलिस की संयुक्त टीम ने जब्त किए है।

चेक पोस्ट पर हो रही वाहनों की चेकिंग आगामी लोकसभा चुनाव में अवैध मादक पदार्थ के साथ नगदी एवं आभूषण गहनों के अवैध परिवहन को रोकने के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी नेहा मीणा एवं पुलिस कप्तान पद्म विलोचन शुक्ल के निर्देशानुसार बॉर्डर क्षेत्र चेक पोस्टों के साथ ग्रामीण क्षेत्रों से लगी गुजरात, राजस्थान एवं महाराष्ट्र की सीमावर्ती गांवों में जानें वाली सड़कों से गुजरते वाहनों की सघन चेकिंग की जा रही है। जिसमे गुजरात से आने वाले और संधिग्ध वाहन जाने वाले ट्रक, बस, कार एवं छोटे वाहनों को चेक किया जा रहा है।

खबर मिलते ही प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे मंगलवार 2 अप्रैल को रात्रि 8 बजे के करीब वाहन चेकिंग के दौरान गुजरात से मध्यप्रदेश की और आ रही कार क्रमांक आरजे-05-सीसी-5226 में सीट के बीच में 13 लाख 39 हजार 115 हजार नगदी एवं 44 किलो चांदी का परिवहन करते हुए पकड़ी। एफएसटी टीम, एसएससी टीम के साथ पिटोल पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में यह चांदी एवं नगदी पकड़ी गई। इस कार्यवाही में मौके पर परिवहनकर्ता राकेश पिता महिपाल सोनी 45 वर्ष नि. बांसवाड़ा से यह नगदी एवं चांदी जप्त की गई। उक्त सामग्री मिलने की खबर पर जिला मुख्यालय के प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे एवं उनके समक्ष पूरी कार्रवाई को अंजाम दिया।

परिवहनकर्ता राकेश नही दे पाए जवाब नगदी एवं चांदी के परिवहनकर्ता बांसवाड़ा निवासी राकेश सोनी के पुलिस को देख पसीने छूट गए इसके बाद प्रशासनिक टीम ने कार्रवाई की।

पुलिस द्वारा बताया गया कि मौके पर वरिष्ठ अधिकारी द्वारा चांदी के परिवहनकर्ता राकेश सोनी से चांदी और नगदी के बारे में पुछताछ करने पर संतोषपूर्ण जवाब नहीं होने से प्रशासनिक कार्रवाई की गई। इस कार्रवाई के बाद चांदी एवं नगदी को जिला ट्रेजरी में अधिकारियों की सुरक्षा के साथ जमा कर दिया गया। इस संपूर्ण कार्यवाही में एफएसटी टीम से एएस वसुनिया, प्रधानारक्षक राजेंद्र गणावा, पुलिस विभाग से अति. पुलिस अधीक्षक पीएल कुर्वे एसडीओपी रूपरेखा यादव, सूबेदार कोमल मीणा, अपर कलेक्टर एसएस मुजाल्दा, एसडीएम एचएस विश्वकर्मा के साथ एएसआई अजीतसिंह खेरा, प्रधानारक्षक संजय सिंगाड़ के साथ पिटोल चौकी प्रभारी पल्लवी भावर, प्रआर. दिलीप डावर, आर. गोपाल की सराहनीय भूमिका रही।

जिम्मेदार बोले - आगामी लोकसाभ चुनाव में अवैध गतिविधियों को रोकने के लिए जिले के सभी प्रसासनिक, विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में सयुंक्त टीम अवैध चांदी, गहने, नगदी एवं मादक पदार्थों के खिलाफ़ कार्यवाही कर रही है जो निरंतर जारी रहेगी।

- पल्लवी भाभर, चौकी प्रभारी पिटोल

3 झाबुआ-1- खबर मिलते ही प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे

3 झाबुआ-2- कार से नगदी व चांदी निकालते हुए

3 झाबुआ-3- चांदी को कांटे पर तोलते हुए

3 झाबुआ-4- नगदी गिनती टीम

होली मिलन समारोह में पत्रकार संघ की कार्यकारणी घोषित हुई

मंडलेश्वर - पत्रकार संघ के द्वारा होली मिलन समारोह आयोजित किया गया! जिसमें पत्रकार संघ की कार्यकारिणी भी घोषित की गई! पत्रकार संघ अध्यक्ष भरत राठौड़ के द्वारा कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए। इन लोगों को जिम्मेदारियां दी गई जिसमें - संरक्षक महेन्द्र कुमार जैन, रमेश चंद्र राठौड़, सलाहकार अध्यक्ष दिनेश मेवाडे, कार्यकारी अध्यक्ष राजेश पंवार,उपाध्यक्ष रामेश्वर कर्मा,उपाध्यक्ष रवि सिन्हा, सचिव समीर जैन, सहसचिव जितेन तंवर, प्रवीण वर्मा, मिडिया प्रभारी रविन्द्र खाण्डेकर, कार्यालय प्रभारी प्रशांत कौशल, सूरज खेड़े, कार्यक्रम प्रभारी कृष्णपाल यादव, कार्यकारणी सदस्यों में दिलीप दसोन्दी, साहिल कुरैशी, लोकेश केवट, दिलबाग पटेल, ताहिर कुरैशी, अक्षय कुशवाह, लवकेश खाण्डेकर को बनाया गया! आयोजन में विधायक मेव भी शामिल हुए व पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा की पत्रकार देश का चौथा स्थम्ब होता है, पत्रकार की कलम में सस्त्रों से अधिक ताकत होती है, पत्रकार समाज को आइना दिखाने का काम करता है ! मेव ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाइयाँ दी व साथ में सह भोज भी किया!

ई वी एम ओर वी वी पेट का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ

भानपुरा :- लोकसभा चुनाव की तैयारी अपने चरम सीमा पर चल रही है, चुनाव आयोग की यह मंशा हैकि कोई भी कर्मचारी प्रशिक्षण से वंचित न रहे। इसी क्रम में आज सी एम राइज स्कूल में आशा कार्यकर्ताओं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं तथा सभी विभाग के कर्मचारी जो प्रशिक्षण से वंचित थे, उनका प्रशिक्षण आज सम्पन्न हो गया है। इस प्रशिक्षण में स्वस्थ्य विभाग, महिला बाल विकास तथा शिक्षा विभाग के सभी कर्मचारियों को आज प्रशिक्षित कर दिया है। प्रशिक्षण देने वाले मास्टर टेंनर कारुलाल कोयल प्राचार्य माडल स्कूल, गुलाम मोहमम्द शेख प्राचार्य शा क उ मा वि तथा दिपक टेलर आदि ने प्रशिक्षण दिया।

आज श्रीलंका लौट गए राजीव गांधी हत्याकांड के तीन दोषी

चेन्नई । राजीव गांधी हत्याकांड के तीन दोषी आज श्रीलंका लौट गए । वो तमिलनाडु के तिरुची में स्पेशल कैंप में रह रहे थे। बीते मंगलवार को केंद्रीय गृह मंत्रालय से अंतिम मंजूरी मिलने के बाद सभी दोषियों के श्रीलंका जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। बता दें कि श्रीलंका जाने वालों में मुरुगन, रॉबर्ट पायस और जयकुमार हैं।श्रीलंकाई अधिकारियों ने उनके सभी दस्तावेज मुहैया करा दिए हैं। 12 नवंबर 2022 से सभी आरोपी तिरुचि में केंद्रीय कारागार के पास स्पेशल कैंप में थे। सुप्रीम कोर्ट से आदेश मिलने के बाद सभी दोषियों की रिहाई का मार्ग प्रशस्त हो सका था।चौथा दोषी, जो कैंप में था, उसका नाम संथन उर्फ टी.सुथेनथिराराजा है। संथन की बीते 21 फरवरी को किडनी फेल होने की वजह से राजीव गांधी अस्पताल में मौत हो गई थी। उसे अपनी बीमार मां की देखभाल के लिए वापस कोलंबो जाना था। हालांकि, उसका निधन हो गया।

42 वर्ष से अनवरत रोज़ा अफ्तार सम्पन्न

जबलपुर, रमजान शरीफ की हर 23 रमज़ानुल मुबारक पर हर साल रोज़ा अफ्तार करवाने की श्रंखला मे आज मोहम्मद सगीर राइन, शहीद राइन की जानिब से रानीताल ईदगाह कला मे रोज़ा अफ्तार अपने 42वा रोज़ा अफ्तार क़े रूप मे प्रवेश किया,रोज़ा अफ्तार मे हज़ारो लोगो ने अफ्तार किया, मग़रिब की नमाज़ हाफ़िज़ अब्दुल कैय्यूम साहब ने अदा करवाई जिसमे मुल्क हिंदुस्तान की तरक्की, खुशहाली, तरक्की और आपसी भाईचारे और

साम्प्रदायिक सौहाद्र और एकता क़े लिये हज़ारो रोज़ेदारो ने हाथ उठाकर अपने रब से दुआ मांगी. धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, एवं प्रबुद्ध बुद्धिजीवीयों सहित मोहम्मद सगीर राईन, प्यारे साहब, हाजी गुलाम मुहम्मद भूरे पहलवान, सरदार अयाज़ राईन, शहीद राईन, सुहेल अज़हर, मुहम्मद शादाब, इदरीश राजा, इक़बाल राईन, अशफाक़ शेरू सहित हज़ारो लोगो ने अफ्तार करते अल्लाह का शुक्र अदा किया.

नीमच वन विभाग की लापरवाही आखिर कब तक और लेगी पेड़ पौधों और वन्य जीव जंतु की जान

विगत कुछ दिन पहले ही देखा गया की मनासा तहसील के सुवासरा गांव के पास बने पेडाक पूरी तरह से जल के राख हो गया और सैकड़ों पोधो के साथ कई वन्य जीव अपनी जान दे चुके उसके बाद भी विभाग को कोई मतलब नही है। आज दिनाक 3 अप्रैल को उसी क्षेत्र गांव बंजारी के करीब करमदी से पंचदेवरा के बीच 5 से 7 किलोमीटर तक जंगल जल के साफ हो गया और साथ ही कई अनगिनत पोधे ओर जीव जंतु जलकर खाक हो गए

।आखिर करोड़ो रुपए लगा कर विभाग पौधों की निदाई गुड़ाई कर और कई तरह का अन्य खर्चा बताने के बाद जो जंगल तैयार होता है उसमे साल भर का पौधा हुआ नहीं और आग क्यों लग जाती है। आग ने इतना विकराल रूप ले लिया कि जिले की कई दमकले आग बुझाने पहुंची फिर भी आग पर काबू नही हुआ एवं आग पंचदेवरा और करमदी गांव के करीब पहुंची जहा सभी गांव वाले पशु पालक है और ये ही इनकी जीविका उपार्जन का मुख्य आधार है, ऐसे में गांव में पशुओ के लिए रखा चारा भूसा भी आग की चपेट में आ गया जिसे पशुपालक नही बचा पा रहे है। कहां है विभाग के जिम्मेदार अधिकारी ?आखिर क्यों इस ओर ध्यान नही दे रहे जिम्मेदार

लायंस क्लब ऑफ पेटलावद ग्रेटर द्वारा 9 स्थानों पर जल मंदिर लगवाए

गर्मी के दिनों में स्वच्छ व ठंडा जल मिलेगा

पेटलावद। जल ही जीवन के ध्येय वाक्य का अनुसरण करते हुए गर्मी का प्रकोप बढते देख लायंस क्लब ऑफ पेटलावद ग्रेटर के द्वारा नगर में 9 स्थानों पर गर्मी के लिए अस्थाई जल मंदिर का निर्माण किया गया है। जिसमें नगर परिषद और नगर के समाजसेवियों का सहयोग लिया गया है। लायंस क्लब ऑफ पेटलावद ग्रेटर के अध्यक्ष सुरेश प्रजापति ने बताया कि लायंस इमेज बिल्डींग प्रोजेक्ट के तहत नगर परिषद व समाजसेवियों के सहयोग से जल मंदिर लगाये गये है। जिससे गर्मी के दिनों में नगरवासियों सहित आसपास के क्षेत्र से आने वाले ग्रामीणों को स्वच्छ व ठंडा जल उपलब्ध हो सके। यहां यहां लगे जल मंदिर स्व. श्रीमती गीतादेवी प्रजापति की स्मृति में पुलिस सहायता क ंद, श्र ंद्व ज लि चौक,स्व.प्रकाशचंद्र वैरागी की स्मृति में शासकीय महाविद्यालय परिसर,स्व.रामकृष्ण जगन्नाथ गुप्ता की स्मृति में शंकर मंदिर, राजेश सीरवी के द्वारा सिविल अस्पताल के सामने, स्व. मांगीलाल जी पुरोहित की स्मृति में न्यायालय परिसर में, पार्षद चांदनी दिपक निमजा के द्वारा जनपद पंचायत के सामने, श्री बालाजी दूध भंडार की ओर से गांधी चौक और राघव मेडिकल की ओर से ग्राम रूपगढ में,स्वर्गीय भेरुलाल जी स्वर्गीय सरजू बाई की स्मृति में सौजन्य से तुलसीराम राठौड़ ग्राम पंचायत खोरिया तहसील पेटलावद मे जल मंदिर की स्थापना की गई। जल मंदिरों का शुभारंभ समाजसेवियों की उपस्थिति में लायंस क्लब अध्यक्ष सुरेश प्रजापति व लायंस सदस्य रविराज पुरोहित,राजेश यादव, प्रवीण पंवार,नवीन वैरागी, संजय चाणोदिया,दीपक सोलंकी,दीपक निमजा,अभिभाषक दुर्गेश पाटीदार,प्राध्यापक कांतु डामोर, रविराज गुर्जर,रोहित मौन्नत,चेतन कटकानी के द्वारा किया गया।

भारतीय जनता पार्टी इंदौर संभाग क्लस्टर बैठक ब्रिलिएंट कन्वेंशन सेंटर इंदौर में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा के आतिथ्य में संपन्न हुई

कुक्षी/इंदोर:–आगामी लोकसभा चुनाव के निमित्त आज विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा ने आज इंदौर में कलस्टर बैठक में मार्गदर्शन प्रदान किया। उक्क्त बैठक में भाजपा प्रदेश मंत्री श्री जयदीप पटेल ने धार जिले के जिलाध्यक्ष श्री मनोज सोमानी व प्रत्याशी श्रीमती सावित्री ठाकुर सहित संभागीय जनप्रतिनिधियों व पदाधिकारी के साथ हिस्सा लिया।।

भाजपा प्रदेश मंत्री श्री जयदीप पटेल में बैठक पश्चात बताया कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन एवं नड्डा के

नेतृत्व में भाजपा ऐतिहासिक बहुमत के साथ पुनः सरकार बनाएगी और हम सभी विकसित भारत के संकल्प को साकार करेंगे।

उक्क्त बैठक में डिप्टी सीएम श्री जगदीश देवड़ा , नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ,संगठन महामंत्री श्री हितानंद शर्मा ,जनजाति कार्य मंत्री श्री डॉ कुँवर विजय शाह ,वन मंत्री श्री नागरसिंह चौहान ,महिला बाल विकास मंत्री निर्मला भुरिया ,इंदौर संभाग प्रभारी श्री राघवेंद्र सिंह, प्रदेश चुनाव प्रबंधन प्रभारी श्री हेमंत खंडेलवाल सहित इंदोर क्लस्टर से बड़ी संख्या में भाजपा परिवार के सदस्य उपस्थित रहे।

खरसोद कला में मेले का शुभारंभ

खरसोदकला में प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी अप्रैल माह में मेला का शुभारंभ हुआ मेले में कई व्यापारी ने भाग लिया अपनी अपनी प्रतिष्ठान दुकान लगाई मेले में डुबड़े झूले आकाश झूले ट्रनाव डुमिकी माउस व्यापारियों ने बच्चों के खिलौने और नारी श्रृंगार की सारी दुकान लगाई पलंग गर्मी से निजात पाने के लिए मिट्टी के मटके नाद ट्रगन्ना रस मलाई कुल्फी जीरा छाछ की दुकानें लगाए मेला देखने आसपास के गांव कल्याणपुरा और कमानपुर ट्रावदिया ,नौगामा ,सलवा, चीरोला लगभग 25 गांव के लोग खरसोद कला के मेले में खरीदारी करने आते हैं वहीं प्रशासन की तरफ से पूरी व्यवस्था की गई किसी प्रकार की कोई चूक ना हो ऐसी व्यवस्था की गई मनचलों आवारा , लड़को के लिए पुलिस की कड़ी वावस्था की गए बच्चियों और नारियों को मेला देखने में असुविधा महसूस न हो

शस्त्र जमा नहीं करने पर लाइसेंस निरस्त हो जाएंगे

रतलाम / लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 शांतिपूर्ण, स्वतंत्र, निष्पक्ष रूप से संपन्न करवाने हेतु कानून व्यवस्था बनाए रखने, लोक शांति हेतु कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी श्री राजेश बाथम द्वारा आयुध अधिनियम 1959 की धारा 17 के तहत जिले के प्रचलित शस्त्र लाइसेंस निलंबित करते हुए तीन दिवस के भीतर शस्त्र लाइसेंसधारी को अपना शस्त्र संबंधित पुलिस थाने में जमा कराए जाने के लिए आदेशित किया गया है। इस संबंध में जिला दंडाधिकारी द्वारा चेतावनी जारी की गई है कि यदि शस्त्र लाइसेंसधारी व्यक्ति द्वारा अपना शस्त्र थाने में जमा नहीं करवाया जाता है तो उसका लाइसेंस निरस्त कर दिया जाएगा।

प्रिंटिंग प्रेस संचालकों की बैठक आयोजित कर निर्वाचन आयोग के निर्देशों से अवगत कराया गया

रतलाम / लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के अंतर्गत रतलाम अनुविभागीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले प्रिंटिंग प्रेस संचालकों की एक बैठक बुधवार को आयोजित कर आयोग के निर्देशों से अवगत कराया गया। इस दौरान उपस्थित एसडीएम श्री संजीव पांडे द्वारा प्रिंटिंग प्रेस संचालकों को आचार संहिता तथा आयोग के निर्देशों की जानकारी दी गई ।बैठक में बताया गया कि प्रिंटिंग प्रेस संचालकों को किसी भी प्रकाशन के तीन दिवस के भीतर उसकी चार प्रतियां जिला मजिस्ट्रेट के समक्ष प्रस्तुत करना होगी। उन्हें परिशिष्ट क तथा परिशिष्ट ख भी भरकर प्रस्तुत करना होंगे। लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दौरान लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 127 (क) अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार के चुनावी पेम्पलेट, पोस्टर, हैण्डबिल या अन्य दस्तावेज प्रकाशक या मुद्रक के नाम, पता वर्णित किए बिना और प्रकाशक की घोषणा जो दो व्यक्तियों द्वारा अनुप्रमाणित की गई हो, प्राप्त किए बगैर निर्वाचन के लिए न तो प्रकाशित व मुद्रित करेंगे और ना ही मुद्रण या प्रकाशन का कार्य करेंगे। समस्त प्रेस, मुद्रकों, प्रकाशकों की जिम्मेदारी है कि वे दस्तावेज के मुद्रण के बाद युक्तिसंगत समय के भीतर घोषणा पत्र आदि दस्तावेज यथा मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, जिला निर्वाचन अधिकारी, रिटर्निंग तथा सहायक रिटर्निंग अधिकारी को उपलब्ध कराएंगे ।सभी प्रिंटिंग प्रेस, मुद्रक, प्रकाशक, फ्लेक्स, बैनर निर्माता आदि को लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 127 (क) के निर्बंधन से अवगत कराया गया है कि कोई भी व्यक्ति कोई ऐसी निर्वाचन पुस्तिका या पोस्टर जिसके मुख पृष्ठ पर उसके मुद्रण और प्रकाशक के नाम और पते नहीं, मुद्रित या प्रकाशित नहीं करेगा और ना मुद्रित या प्रकाशित करवाएगा। कोई भी व्यक्ति किसी निर्वाचन पुस्तिका या पोस्टर को उस दशा के सिवाय न तो मुद्रित करेगा और न करवाएगा, जिसमें वह उसके प्रकाशक की अनन्यता के बारे में अपने द्वारा हस्ताक्षरित और ऐसे दो व्यक्तियों द्वारा जो उसे स्वयं जानते हैं अनुप्रमाणित द्विपत्ति की घोषणा मुद्रक की परिदत्त कर देता है तथा उस दशा में के सिवाय न तो मुद्रित करेगा और न करवाएगा जिसमें कि मुद्रक घोषणा पत्र की एक प्रति दस्तावेज की एक प्रति सहित। उस दशा में जिसमें कि वह राज्य की राजधानी में मुद्रित की जाती है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी को तथा किसी अन्य दशा में उस जिले के जिसमें कि मुद्रित की जाती है जिला दण्डाधिकारी को दस्तावेज के मुद्रण के पश्चात् युक्तियुक्त के भीतर भेज देता है ।इस धारा के प्रयोजन के लिए दस्तावेज की अनेकानेक प्रतियां बनाने की ऐसी किसी प्रक्रिया के बाबत् जो हाथ से नकल करकेऐसी प्रतियां बनाने से भिन्न है, यह समझा जाएगा कि वह मुद्रण है और (मुद्रक) पद का अर्थ तद्नुसार लगाया जाएगा ।निर्वाचन पुस्तिका या पोस्टर से किसी अभ्यर्थी या अभ्यर्थियों का समूह के निर्वाचन को सम्प्रवर्तित या प्रतिकुलित प्रभावित करने के परियोजन के लिए वितरित कोई मुद्रित पुस्तिका, पर्चा या अन्य दस्तावेज या अन्य निर्वाचन के प्रति निर्देश करने वाला कोई प्लेकार्ड या पोस्टर अभिप्रत है, किन्तु किसी निर्वाचन सभी तारीख, समय, स्थान अन्य विशिष्ठियों की केवल आख्यापित करने वाला या निर्वाचन अभिकर्ताओं या कार्यकर्ताओं की चर्चा संबंधी अनुदेश देने वाला कोई पर्चा, प्लेकार्ड या पोस्टर इसके अन्तर्गत नहीं आता है। जो व्यक्ति उपधारा (1) या उक्त धारा (2) के उपबंधों से किसी का उल्लंघन करेगा, वह कारावास से जिसकी अवधि 6 माह तक की हो सकती है या जुर्माना से जो दो हजार रुपए तक हो सकेगा या दोनो दण्डनीय होगा।

अत्यधिक ग्रीष्म के मद्देनज़र सिविल सर्जन ने चिकित्सकों की बैठक ली

रतलाम / सिविल सर्जन डॉ. एम.एस. सागर ने आगामी ग्रीष्म ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए चिकित्सालय परिसर में चिकित्सकों की बैठक ली। बैठक के दौरान उन्होंने निर्देशित किया कि गर्मी के मौसम में अक्सर अस्पताल में बिजली के तारो से स्पार्किंग के कारण आगजनी की घटना घटित होती है या फिर पानी की किल्लित पैदा होती है। ऐसी अप्रिय घटना घटित ना हो इसके लिए विस्तार से कार्य योजना तैयार की गई।

कांग्रेस में मची भगदड़ दो दर्जन से अधिक पदाधिकारी सहित 200 कार्यकर्ताओं ने ली भाजपा की सदस्यता

भाजपा का होली मिलन समारोह हुआ संपन्न

तराना। भाजपा विधानसभा तराना के कार्यकर्ताओं का होली मिलन समारोह कलश श्री गार्डन तराना में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित कार्यकर्ताओं को भाजपा जिला ग्रामीण अध्यक्ष बहादुरसिंह बोरमुंडला, भाजपा लोकसभा प्रत्याशी अनिल फिरोजिया नागदा खाचरोद विधायक एवं लोकसभा चुनाव जिला संयोजक डॉ. तेजबहादुरसिंह चौहान, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष मदनलाल सांखला पूर्व विधायक ताराचंद गोयल पुर्व विधायक रोडमल राठौर विधानसभा प्रभारी अमित श्रीवास्तव भाजपा जिला महामंत्री नाहरसिंह पंवार किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष रामसिह बडाल ,भाजपा जिला उपाध्यक्ष द्वय ईश्वरसिंह पाटीदार वासुदेव पाण्डे वरिष्ठ नेता सतीश मुंदड़ा आदि ने संबोधित कर भारतीय जनता पार्टी को तराना विधानसभा से एक लाख से अधिक मतों से

भगदड़ का असर तराना विधानसभा में भी देखने को मिला भाजपा के होली मिलन समारोह में कांग्रेस के दो दर्जन से अधिक पदाधिकारी सहित लगभग 200 कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस छोड़ भाजपा की सदस्यता ग्रहण की जिसमें वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं अभिभाषक चंद्र प्रकाश भट्ट के पुत्र निशिकांत व शशिकांत भट्ट हाई कोर्ट अभिभाषक अजय पांडे लक्ष्मीपुरा , अभिभाषक प्रदीप शर्मा , गल्ला व्यापारी प्रदीप बोडाना ,दामोदर पटेल ग्राम बघेरा महेश पटेल ग्राम बघेरा आदि सहित 200 कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की कार्यक्रम मे वरिष्ठ भाजपा नेता ओम प्रकाश पलोड़ मंडल अध्यक्षगण फूलसिंह गुर्जर अशोक पाटीदार पप्पूसिंह चंद्रावत आकाश विजय श्री बनाने का आह्वान किया।देश में कांग्रेस में मची बोडाना मार्केटिंग अध्यक्ष लक्ष्मणसिंह बड़ाल ललित सोमानी सुभाष जोशी महेश जोशी विजय जायसवाल प्रहलाद जाजू सरपंच संघ अध्यक्ष चरणसिह गुर्जर सहित वर्तमान/पूर्व मंडी अध्यक्ष उपाध्यक्ष डायरेक्टर, मार्केटिंग अध्यक्ष उपाध्यक्ष डायरेक्टर,मोर्चा प्रकोष्ट के अध्यक्ष जनपद पंचायत पुर्व अध्यक्ष उपाध्यक्ष महिला मोर्चा सहित कार्यसमिति सदस्य, वरिष्ठजन, जिला पंचायत सदस्य, जनपद सदस्य, सरपंच, बुथ की समिति, पन्ना प्रमुख, एवम् समस्त भारतीय जनता पार्टी के देवतुल्य कार्यकर्ता आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम पश्चात स्नेह भोज का आयोजन किया गया कार्यक्रम का संचालन विधानसभा संयोजक कृष्णपालसिंह झाला ने किया जानकारी लोकसभा चुनाव तराना विधानसभा मीडिया प्रभारी शिवनारायण गुर्जर सतीश जायसवाल ने संयुक्त रुप से दी।

कलेक्टर श्री गुप्ता ने सोनकच्छ विकासखण्ड के विभिन्न गेहूं उपार्जन केंद्रों, मतदान केन्द्रों, आंगनवाड़ी केन्द्रों और मतदान दलों को दिये जा रहे प्रशिक्षण का किया निरीक्षण

एफएलएन की जानकारी नहीं देने पर शिक्षक मधुकर भार्गव को निलम्बित और जन शिक्षक सुश्री मंगला धाकड़ का एक माह का वेतन काटने के निर्देश दिये

एकीकृत हाई स्कूल बीसाखेडी के प्राथमिक शिक्षक और स्कूल प्रभारी का दो-दो दिन का वेतन काटने के निर्देश दिये

देवास - कलेक्टर श्री ऋषव गुप्ता ने सोनकच्छ विकासखण्ड के विभिन्न उपार्जन केन्द्रों, मतदान केन्द्रों, आंगनवाड़ी केन्द्रों और मतदान दलों को लोकसभा निर्वाचन के लिए दिये जा रहे प्रशिक्षण का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान सीईओ जिला पंचायत श्री हिमांशु प्रजापति, एसडीएम टोंकखुर्द श्री कन्हैयालाल तिलवारी, तहसीलदार श्री मनीष जैन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे ।प्राथमिक शाला मुरम्या के निरीक्षण के दौरान शिक्षक मधुकर भार्गव और जन शिक्षक सुश्री मंगला धाकड़ द्वारा एफएलएन की जानकारी नहीं देने पर कलेक्टर श्री गुप्ता ने शिक्षक मधुकर भार्गव को निलम्बित करने और जन शिक्षक सुश्री मंगला धाकड़ का एक माह का वेतन काटने के निर्देश दिये। पीएचई विभाग को स्कूल परिसर में बोरिंग करने एवं प्याऊ को चालू करने के निर्देश दिये। पंचायत भवन में बनाये गये मतदान केन्द्र का निरीक्षण किया और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि मतदान केन्द्रों पर सभी आवश्यक कार्य समय रहते कर लें ।कलेक्टर श्री गुप्ता ने एकीकृत हाई स्कूल बीसाखेडी का निरीक्षण कर जर्जर स्कूल भवन को तोडने के निर्देश पीडब्ल्यू विभाग को दिये। प्राथमिक शिक्षक श्रीमती एकता कुंभकार और स्कूल प्रभारी श्री दिनेश चौहान द्वारा एफएलएन एवं दक्षता उन्यन के बारे में जानकारी नहीं देने और एफएलएन बुक को चेक नहीं करने पर दो-दो दिन का वेतन काटने के निर्देश दिये। पीएचई को निर्देश दिये कि स्कूल में पुरानी पानी मोटर की जगह नई पानी की मोटर लगाये। निरीक्षण के दौरान में स्कूल में साफ-सफाई रखने के निर्देश भी दिये। बीसाखेडी में पंचायत भवन में बनाये गये मतदान केन्द्र का निरीक्षण किया और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के निर्देश दिये। कलेक्टर श्री गुप्ता ने कहा कि मतदान केन्द्रों पर सभी आवश्यक कार्य समय रहते कर लें। कलेक्टर श्री गुप्ता ने बीसाखेड़ी में आंगनवाडी केन्द्र का निरीक्षण किया। आंगनवाडी कार्यकर्ता श्रीमती रामकन्या दुबे और सुपरवाईजर श्रीमती फिरदोस शेख द्वारा आंगनवाडी केन्द्र पर बच्चों के लिए अच्छा कार्य करने पर कलेक्टर श्री गुप्ता ने बधाई दी। कलेक्टर श्री गुप्ता ने आंगनवाडी केन्द्रों में उपस्थित बच्चों से चर्चा की और आंगनवाडी केन्द्र में मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली। उपार्जन केन्द्रों के निरीक्षण के दौरान कलेक्टर श्री गुप्ता ने बीसाखेडी में प्रभु कृष्ण वेयर हॉउस, बैराखेडी फाटा में सांवरिया लॉजिस्टिक वेयर हॉउस, पीपलरावां में सिद्धि विनायक वेयर हॉउस, शासकीय वेयर हाउस सोनकच्छ का निरीक्षण कर किसानों से गेहूं की गुणवत्ता, तौल व्यवस्था, गेहूं उत्पादन, मंडी दर, आदि व्यवस्थाओं के संबंध में चर्चा की। सभी उपार्जन केन्द्रों में कृषक सुविधायें, तौल, गुणवत्ता मापदण्ड का पालन करने के लिए संबंधित अधिकारी को निर्देशित किया।

महारानी ने खाया सत्तू, उनकी सरलता की क़ायल हुईं महिलाएँ

बमोरी विधानसभा का म्याना में संपन्न हुआ मातृ शक्ति सम्मेलन

गुना।बमौरी विधानसभा के म्याना कस्बे में पहुँची ग्वालियर राजघराने की महारानी प्रियदर्शिनी राजे सिंधिया का सहज और सरल रूप देखकर कार्यक्रम में उपस्थित हज़ारों महिलाएँ उनकी कायल हो गईं जब उन्होंने ग्रामीण महिलाओं द्वारा तैयार किया गया सत्तू बड़े चाव से खाया और उपस्थित अन्य महिलाओं को खिलाया भी।वे म्याना में आयोजित मातृ शक्ति सम्मेलन में शामिल होने पहुँची थी साथ ही उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अपने पति केंद्रीय मंत्री एवं भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया के पक्ष में मतदान करने की अपील की है।अच्छी ख़ासी गर्मी होने हुए भी अपनी महारानी की एक झलक पाने एवं उन्हें सुनने हज़ारों की संख्या में उपस्थित रहीं।श्रीमती सिंधिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पिछले दस साल में महिला सशक्तिकरण के लिए कई ऐतिहासिक कदम उठाये हैं अब आपकी बारी है अपने महाराज साहब और प्रधानमंत्री जी के हाथों को मज़बूत बनाये और भारत देश को विश्वगुरु बनाने के लिए लोकतंत्र के इस महायज्ञ में सभी महिलाओं वोट के रूप में अपनी आहुति दें। भाजपा जिला मिडिया प्रभारी विकास जैन नखराली ने बताया की म्याना में आयोजित मातृ शक्ति सम्मेलन से पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं गुना लोकसभा से भाजपा प्रत्यासी श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी की धर्मपत्नी महारानी श्रीमती प्रियदर्शनी राजे सिंधिया ने बुधवार को जन संपर्क की शुरुवात टेकरी धाम पहुंच श्री हनुमान जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद लिया उसके बाद म्याना में आयोजित मातृ शक्ति सम्मेलन में सम्मिलित होकर संबोधित करते हुए कहा कि इस बमोरी क्षेत्र में न सड़के थी और न ही पानी की कोई स्त्रोत था। महाराज साहब ने इस क्षेत्र में तालाब बनवाएं, सड़के बनवाई, स्कूल आदि से इस क्षेत्र का विकास किया। अब हमारी सभी बहनों की जिम्मेदारी बनती हे की हम आने वाली 7 मई को कमल खिलाकर गुना लोकसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्यासी श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को समर्थन देकर महाराज साहब को इतिहासिक मतों से जिताकर दिल्ली भेजे और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथ मजबूत कर देश के विकास में आप अपना योगदान दे। मिडिया प्रभारी श्री जैन ने बताया की इस अवसर पर कार्यक्रम में पूर्व मंत्री महेंद्र सिंह सिसोदिया,भाजपा ज़िलाध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह सिकरवार,महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष राजेश राजपूत, ज़िला पंचायत उपाध्यक्ष सारिका लुंबा सहित बड़ी संख्या में बमोरी विधानसभा की माता और बहने उपस्थित रही।

आगामी चुनाव के दृष्टिगत जिले में प्रतिबंधात्मक कार्यवाहियों के संबंध में पुलिस-प्रशासन के अधिकारियों की हुई समन्वय बैठक

बुरहानपुर,जिला कलेक्टर सुश्री भव्या मित्तल एवं पुलिस अधीक्षक श्री देवेंद्र कुमार पाटीदार के नेतृत्व में आगामी लोकसभा निर्वाचन को शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने हेतु प्रतिबंधात्मक कार्यवाहियों को लेकर पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों की कलेक्टर कार्यालय सभागृह में समन्वय बैठक आयोजित की गई। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अंतर सिंह कनेश व एडीएम श्री शंकर लाल सिंघाड़े द्वारा बैठक ली गई। प्रतिबंधात्मक कार्यवाहियों में पुलिस द्वारा की जाने वाली धारा 107,116(3) सीआरपीसी की कार्यवाही के प्रकरण कानून व्यवस्था की दृष्टि से तहसीलदार कार्यालय में तथा 110 सीआरपीसी के प्रकरण संबंधित अनुविभागीय अधिकारी के न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने हेतु

आदेश कलेक्टर कार्यालय से जारी किया गया है। समन्वय बैठक में एडीएम श्री सिंघाड़े द्वारा अधिकारियों को बाऊंड ओवर की कार्यवाही की जानकारी अपडेट रखने, थाना प्रभारियों एवं तहसीलदार को आपसी समन्वय करके कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री कनेश ने थाना प्रभारियों को बाउंड ओवर के प्रकरण की जानकारी हर दिन पोर्टल पर अपडेट करने के निर्देश दिए। बाउंड ओवर की कार्यवाही अप्रैल महीने में ही पूर्ण करने हेतु दिशा निर्देश दिए गए। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अंतर सिंह कनेश, एडीएम श्री वीर सिंह चौहान, एडीएम श्री शंकर लाल सिंघाड़े, एसडीएम बुरहानपुर सुश्री पल्लवी पुराणिक, एसडीएम नेपानगर श्री अजमेर सिंह गौड़, सीएसपी श्री गौरव पाटिल, एसडीओपी नेपानगर श्री निर्भय सिंह अलावा, डिप्टी कलेक्टर श्री भागीरथ वाखला, सभी थानों के थाना प्रभारी, तहसीलदार उपस्थित रहे।

नरवाई जलाने पर पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि वसूली जायेगी

देवास जिले के किसान खेतों में नरवाई ना जलाये, नरवाई जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता होती है नष्ट

देवास - उप संचालक कृषि ने देवास जिले के किसानों से आग्रह किया है कि किसान खेतों में फसल अवशेष (नरवाई) ना जलावें, फसल कटाई के बाद बचे फसल अवशेषों में आग लगाने से पर्यावरण गंभीर रूप से प्रभावित होता है। भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। जिले में नरवाई जलाने पर पर्यावरण क्षतिपूर्ति राशि देय होगी। जो दो एकड़ से कम पर 02 हजार 500, दो एकड़ से अधिक व 5 एकड से कम पर 05 हजार रूपये और 05 एकड़ से अधिक पर 15 हजार रूपये अर्थदण्ड वसूला जायेगा। नरवाई जलाने से भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव एवं केचुआं सहित पशु-पक्षी आदि विभिन्न जीव जलकर नष्ट हो जाते हैं। इनके नष्ट होने से खेत की उर्वरकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। फसल अवशेषों को खेत में ही मिट्टी पलटने वाले हल से या रोटावेटर से मिलाएं, जिससे खेत की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि होगी। गेहूं की फसल काटने के पश्चात जो तने की अवशेष अर्थात नरवाई होती है, उसमें लगभग नत्रजन 0.50 प्रतिशत, स्फूर 0.6 और पोटाश 0.8 प्रतिशत पाया जाता है, जो नरवाई में जलकर नष्ट हो जाता है। भूमि की ऊपरी पर्त में उपलब्ध आवश्यक पोषक तत्व आग लगने के कारण जलकर नष्ट हो जाते हैं। भूमि की भौतिक दशा खराब हो जाती है, भूमि कठोर हो जाती है, जिसके कारण भूमि की जलधारण क्षमता कम हो जाती है। इसके फलस्वरूप फसलें जल्दी सूखती है। भूमि में होने वाली रासायनिक क्रियाएं भी प्रभावित होती है, जैसे कार्बन व नाइट्रोजन एवं कार्बन और फास्फोरस का अनुपात बिगड़ जाता है, जिससे पौधों को पोषक तत्व ग्रहण करने में कठिनाई होती है। नरवाई की आग फैलने से जन-धन की हानि होती है एवं पेड़ पौधे जलकर नष्ट हो जाते हैं। गेहूं फसल के दाने से डेढ़ गुना भूसा होता है। अर्थात एक हेक्टर में 40 क्विंटल गेहूं का उत्पादन होगा तो भूसे की मात्रा 60 क्विंटल होगी और इस भूसे से 30 किलो नत्रजन, 36 किलो स्फूर, 90 किलो पोटाश प्रति हेक्टर प्राप्त होता है।

रिक्टर स्केल पर 7.5 रही तीव्रता, जापान और फिलीपींस तक महसूस किए गए झटके

ताइवान में भूकंप से 9 की मौत, 930 लोग घायल

ताइपे/टोक्यो। ताइवान में बुधवार को 7.5 तीव्रता का भूकंप आया। इसके झटके जापान और फिलीपींस तक महसूस किए गए। ताइवान के फायर डिपार्टमेंट के मुताबिक, 9 लोगों की मौत हुई है। 930 से ज्यादा लोग घायल हैं। मरने वालों का आंकड़े बढ़ने की आशंका जताई जा रही है।

जानकारी के मुताबिक भूकंप ईस्ट ताइवान के हुलिएन शहर में आया। इसका केंद्र धरती से 34 किलोमीटर नीचे था। भारतीय समय के मुताबिक सुबह 5:30 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए। कई इमारतें जमींदोज हो गईं, लैंड स्लाइड भी हुई है। रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। ताइवान में भूकंप से मची तबाही पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी दुख जताया। सोशल मीडिया पर पोस्ट में पीएम ने लिखा, भूकंप में घायल हुए लोगों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। हम इस मुश्किल घड़ी में ताइवान के लोगों के साथ हैं। 25 साल में आने वाला सबसे तेज तीव्रता वाला भूकंप भारत ने ताइवान में रहने वाले भारतीयों के लिए एडवाइजरी जारी की है। इंडिया ताइपे एसोसिएशन ने इमरजेंसी नंबर और ई-मेल आईडी जारी की है। दरअसल, ताइवान में करीब 5 हजार भारतीय रहते हैं। ताइवान में 100 से ज्यादा आफ्टरशॉक आए हैं। वहीं, ताइवानी सेंट्रल वेदर ब्यूरो के मुताबिक, यह ताइवान में 25 साल में आने वाला सबसे तेज तीव्रता वाला भूकंप है। इसके पहले 1999 में 7.6 तीव्रता का भूंकप आया था। तब 2 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। 10 फीट तक की लहरें उठने का था अनुमान भूकंप के बाद ताइवान, जापान और फिलीपींस ने सुनामी का अलर्ट जारी किया था। जापान के मौसम विभाग ने समुद्र में 3 मीटर यानी करीब 10 फीट तक की लहरें उठने का अनुमान जताया था। हालांकि, जापान और फिलीपींस ने अब सुनामी अलर्ट हटा दिया है। जापान और चीन, ताइवान को मदद देने के लिए तैयार हैं। चीनी मीडिया के मुताबिक, चीन में ताइवान मामलों पर नजर रखने वाले ऑफिस ने कहा कि वो भूकंप से हुए नुकसान से चिंतित है और ताइवान में मदद भेजने को तैयार है। चीन, ताइवान को अपना हिस्सा बताता है। वहीं, ताइवान अपने आपको स्वतंत्र कहता है।

ओलिंपियन बॉक्सर बोले- भाजपा में शामिल होकर बहुत सारे खिलाड़ियों को भला करूंगा

विजेंदर सिंह ने कांग्रेस का साथ छोड़ थामा भाजपा का दामन

चंडीगढ़। हरियाणा के भिवानी में रहने वाले ओलिंपियन बॉक्सर विजेंदर सिंह ने बुधवार को कांग्रेस का साथ छोड़ भाजपा में शामिल हो गए। उन्होंने नई दिल्ली में भाजपा मुख्यालय में पार्टी की सदस्यता ली। भाजपा में शामिल होने के बाद उन्होंने कहा- मैं विकास और देश की तरक्की के लिए भाजपा से जुड़ा हूं। मैं चाहता हूं कि लोगों का भला कर सकूं।

हरियाणा के खिलाड़ियों के प्रदर्शन को लेकर पूछे गए सवाल पर विजेंदर सिंह ने कहा कि मैंने हमेशा गलत को गलत और सही को सही कहा है। मैं भाजपा में शामिल होकर बहुत सारे खिलाड़ियों का भला करूंगा। कांग्रेस में क्या कमी है कि आप भाजपा में शामिल हो गए, इस सवाल पर उन्होंने कहा कि ये तो कांग्रेस वाले बताएंगे कि उनमें क्या कमी है। मैं तो अब बीजेपी में शामिल हो गया हूं। दरअसल, हरियाणा में सबसे ज्यादा 22.2 प्रतिशत जाट वोटर हैं। विजेंदर सिंह जाट हैं, ऐसे में भाजपा उन्हें लोकसभा चुनाव में हरियाणा में पार्टी प्रत्याशियों के चुनाव प्रचार के दौरान प्रमुख चेहरा बना सकती है। हालांकि भाजपा हरियाणा में

2014 से नॉन जाट की राजनीति कर रही है। 2014 में जब भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ आई थी तब भी पार्टी ने पंजाब समुदाय से आने वाले मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री बनाया था। इसके बाद फिर जजपा के सहयोग से 2019 में पार्टी सत्ता में आई तो फिर से नॉन जाट चेहरे मनोहर लाल को ही मुख्यमंत्री बनाया गया।

किसान आंदोलन का किया था समर्थन विजेंदर ने 2024 में हरियाणा के भिवानी से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ने का ऐलान किया था। हालांकि उन्होंने इस ऐलान के साथ ही कहा था कि यह फैसला पार्टी करेगी। विजेंदर ने किसान आंदोलन का भी समर्थन किया था। कुछ समय पहले विजेंदर के आम आदमी पार्टी में भी शामिल होने की चर्चा शुरू हुई थी। विजेंदर सिंह ने 3 महीने पहले एक ट्वीट कर सबको चौंका दिया था। उन्होंने अपने हैंडल पर लिखा- राजनीति को राम-राम भाई। उनके इस बयान से कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्होंने पॉलिटिक्स से तौबा कर ली है। हालांकि इसके बाद उन्होंने इसे खारिज करते हुए राजनीति में सक्रिय रहने का भी ऐलान किया था। पश्चिमी यूपी, राजस्थान और हरियाणा की सीटों पर होगा असर

विजेंदर 2019 में कांग्रेस में शामिल हुए थे। पार्टी ने उन्हें साउथ दिल्ली से लोकसभा चुनाव में उम्मीदवार बनाया था, लेकिन वे हार गए थे। विजेंदर जाट समुदाय से आते हैं। ऐसे में वे लोकसभा चुनाव में पश्चिमी यूपी, राजस्थान और हरियाणा की सीटों पर असर डाल सकते हैं। उन्होंने 2008 बीजिंग ओलिंपिक में ब्रॉन्ज मेडल जीता था। एशियन गेम्स में उन्होंने गोल्ड मेडल अपने नाम किया था।

बॉलीवुड में भी रहे एक्टिव

विजेंदर सिंह ने एक्टर के रूप में बॉलीवुड में अपनी शुरूआत 13 जून 2014 को रिलीज हुई फिल्म फगली से की थी। फिल्म का निर्माण ग्रेजिंग गोट प्रोडक्शंस द्वारा किया गया है, जिसके मालिक अक्षय कुमार और अश्विनी यार्डी हैं। हालांकि उनकी इस फिल्म को औसत से ऊपर रिव्यू मिले थे।

ड्रग तस्कर के साथ जुड़ा नाम

पंजाब पुलिस ने अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ी जगदीश सिंह उर्फ भोला के घर से 130 करोड़ रुपए की 26 किलो हेरोइन बरामद किया था। तस्कर अनूप सिंह ने दावा किया था कि विजेंदर सिंह और उनके दोस्त राम सिंह ने कई मर्तबा हेरोइन खरीदी थी। पुलिस की कड़ी पूछताछ में विजेंदर के दोस्त राम सिंह ने ड्रग्स लेने की बात स्वीकार भी की थी। तस्कर के घर में बॉक्सर विजेंदर सिंह की तस्वीर मिली तो घर के बाहर उनकी पत्नी के नाम रजिस्टर्ड कार भी बरामद की गई थी। हालांकि इस पूरे मामले में विजेंदर और उनकी पत्नी अर्चना ने पुलिस से पूछताछ में खुद को निर्दोष बताया था।

राष्ट्रपति मुइज्जू ने दोहराई बात- मालदीव से भारतीय सैनिकों का दूसरा बैच अप्रैल में ही लौटेगा वापस

माले। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने कहा है कि दूसरे विमानन मंच पर तैनात भारतीय सैन्य कर्मी 'चालू महीने में% ही लौट जाएंगे और दोहराया कि यह प्रक्रिया 10 मई तक पूरी हो जाएगी। मीडिया में बुधवार को आई खबर में यह जानकारी दी गई। मुइज्जू का बयान मालदीव में तैनात लगभग 25 भारतीय सैन्य कर्मियों के पहले जत्थे की वापसी के करीब तीन सप्ताह बाद आया है। ये सैनिक भारत की ओर से उपहार में दिए गए एक हेलीकॉप्टर का संचालन कर रहे थे। भारतीय सैनिक दोनों देशों के बीच बनी सहमति के अनुसार हेलीकॉप्टर का संचालन भारतीय असैन्य दल को सौंपने के बाद लौटे। पहले जत्थे के लौटने की अंतिम समय सीमा 10 मार्च तय की गई थी। मालदीव में 88 भारतीय सैन्यकर्मी दो हेलीकॉप्टर और एक डोर्नियर विमान का संचालन कर रहे थे जो इस द्वीपीय देश में मानवीय और चिकित्सा निकासी सेवाएं प्रदान करते हैं। दोनों पक्षों के बीच दो फरवरी को नयी दिल्ली में हुई एक उच्च स्तरीय बैठक के बाद, भारत 10 मई तक मालदीव में तीन विमानन मंचों का संचालन करने वाले अपने सैन्य कर्मियों को बदलने पर सहमत हुआ। पहला जत्था 10 मार्च से काफी पहले द्वीपीय देश से लौट आया था। सरकारी मीडिया ने बताया कि मुइज्जू ने एक जनसभा में यह ताजा बयान दिया। उन्होंने मालदीव की स्वतंत्रता को संरक्षित करने की अपनी प्रतिबद्धता भी दोहराई और इस बात पर जोर दिया कि उनकी सरकार इस वादे को पूरा करने के लिए समर्पित है। राष्ट्रपति ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच हुए समझौतों के तहत भारतीय सैन्य कर्मियों की वापसी की प्रक्रिया जारी है। पीएसएमन्यूज डॉट एमवी की खबर के मुताबिक उन्होंने कहा कि दूसरे विमानन मंच पर तैनात सैनिकों को इसी महीने वापस बुला लिया जाएगा, जबकि तीसरे मंच पर तैनात सैनिकों को 10 मई तक हटाया जाएगा। मुइज्जू चीन समर्थक नेता माने जाते हैं। उन्होंने बार-बार कहा है कि 10 मई के बाद कोई भी भारतीय सैन्यकर्मी, यहां तक कि सादे कपड़ों में भी, उनके देश में मौजूद नहीं होगा।

राजीव गांधी हत्याकांड के तीनों दोषियों को भारत ने किया आजाद

रिहाई के 2 साल बाद श्रीलंका लौटे

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी हत्याकांड में दोषी ठहराए गए 3 लोगों को भारत ने आजाद कर दिया है। रिहा किए गए तीनों दोषी मुरुगन उर्फ श्रीहरन, जयकुमार और रॉबर्ट पायस बुधवार को श्रीलंका लौट गए हैं। ये सभी उन 6 लोगों में से हैं जिन्हें 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने रिहा कर दिया था। रिहाई के बाद इन्हें तिरुचिरापल्ली के स्पेशल कैंप में रखा गया था। वे मंगलवार की रात में चेन्नई पहुंचे और आज सुबह कोलंबो के लिए रवाना हुए। इससे पहले श्रीलंकाई उच्चायोग ने उनकी घर वापसी के लिए यात्रा दस्तावेज जारी किया था। इन्हें हाल ही में श्रीलंका ने पासपोर्ट प्रदान किए थे। राजीव गांधी हत्या मामले में एक अन्य श्रीलंकाई नागरिक संथन की मौत हो गई थी। इसके अलावा जिन अन्य लोगों को राजीव गांधी हत्या मामले में रिहा किया गया था, वे पेरारिवलन, रविचंद्रन और नलिनी हैं। ये सभी भारतीय नागरिक हैं। नलिनी के पति का नाम मुरुगन उर्फ श्रीहरण है। नलिनी अपने पति मुरुगन को छोड़ने के लिए वह हवाई अड्डे तक आई थीं और काफी देर वहां बैठीं। 30 साल बिताए थे जेल में नलिनी समेत सभी 6 दोषियों को मौत की सजा हुई थी, लेकिन 3 दशक पहले नलिनी के गर्भवती की जानकारी होने पर राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी के हस्तक्षेप से उनकी जान बच गई। इन सभी आरोपियों ने करीबन 30 साल जेल में समय बिताया। आपको बता दें कि नलिनी की बेटी ब्रिटेन में डॉक्टर है। 21 मई 1991 को एक चुनावी रैली के दौरान हुई थी राजीव गांधी की हत्या 21 मई 1991 को एक चुनावी रैली के दौरान तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में एक आत्मघाती हमले में राजीव गांधी की हत्या कर दी गई थी। उन्हें एक महिला ने माला पहनाई थी, इसके बाद धमाका हो गया। इसमें पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी मारे गए थे। राजीव को माला पहनाने वाली महिला की पहचान धनु के तौर पर हुई थी। इस हादसे में 18 लोगों की मौत हुई थी। पुलिस ने इस मामले में कुल 41 लोगों को आरोपी बनाया गया था। इसमें से 12 लोगों की मौत हो चुकी थी और तीन फरार हो गए थे। बाकी 26 पकड़े गए थे। इसमें श्रीलंकाई और भारतीय नागरिक थे। फरार आरोपियों में प्रभाकरण, पोट्टू ओम्मान और अकीला थे। टाडा कोर्ट ने सुनाया था हजार पन्नों का फैसला आरोपियों पर टाडा कानून के तहत कार्रवाई की गई। 7 साल तक चली कानूनी कार्यवाही के बाद 28 जनवरी 1998 को टाडा कोर्ट ने हजार पन्नों का फैसला सुनाया।

सुरक्षा परिषदों के सचिवों की बैठक में बोले अजीत डोभाल

प्राकृतिक आपदा राहत कोष से धन देने की मांग

नई दिल्ली। तमिलनाडु सरकार ने केंद्र सरकार पर प्राकृतिक आपदा राहत कोष को रोकने का आरोप लगाया है। साथ ही इस मामले में सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। एमके स्टालिन के नेतृत्व वाली द्रमुक सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 131 का प्रयोग करते हुए शीर्ष अदालत में मुकदमा दायर किया है। अपनी याचिका में स्टालिन सरकार ने आरोप लगाया है कि प्राकृतिक आपदाओं के लिए केंद्र से मिलने वाला धन उसके लिए जारी नहीं किया जा रहा है। साथ ही इसमें तमिल सरकार ने हाल ही में आई बाढ़ और चक्रवात मिचौंग से हुए नुकसान के लिए केंद्र को 37,000 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता प्रदान करने का निर्देश देने का आग्रह किया। इतना ही नहीं याचिका में केंद्र को अंतरिम उपाय के रूप में 2000 करोड़ रुपये जारी करने का निर्देश देने की भी मांग की गई है।

इससे पहले, कर्नाटक सरकार ने भी केंद्र के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का रुख किया था। उसने यह आरोप

लगाया था कि केंद्र सूखे की स्थिति से निपटने के लिए उसे वित्तीय सहायता नहीं दे रहा है। इसने यह निर्देश देने की मांग की थी कि राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया कोष से धन जारी किया जाए।

संयुक्त राष्ट्र में रुचिरा कंबोज ने अक्षय पात्र की सराहना

इंटरनेशनल डेस्क. न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित करने के लिए देश द्वारा उठाए गए सक्रिय उपायों और उल्लेखनीय सफलताओं को रेखांकित किया। चर्चा के केंद्र में भूख के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में आशा की किरण अक्षय पात्र फाउंडेशन का अनुकरणीय कार्य था। कंबोज ने 4 बिलियन भोजन परोसने की अक्षय पात्र की उपलब्धि के महत्व पर प्रकाश डाला। रुचिरा कंबोज ने फाउंडेशन की अटूट प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का एक विशेष संदेश दिया। भूख मिटाना और मानवता का पोषण करना। यह कार्यक्रम यूनाइटेड में आयोजित किया गया। न्यूयॉर्क में राष्ट्र मुख्यालय ने वैश्विक कल्याण के प्रति भारत के समर्पण को रेखांकित किया। कंबोज ने गरीबी से निपटने में भारत की प्रगति पर जोर दिया, जिसमें 2030 के लक्ष्य से काफी पहले 415 मिलियन से अधिक लोग गरीबी से बाहर निकल रहे हैं। उन्होंने कहा- लेकिन हम यहीं नहीं रुक रहे हैं। हमारा मंत्र वसुधैव कुटुंबकम-एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य हमारा मार्गदर्शन करता है। पिछले साल जी20 शिखर सम्मेलन में हमने दुनिया के सामने अपनी विरासत फसल मोटे अनाज का प्रदर्शन किया था। कंबोज ने कहा- प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण (पीएम पोषण) योजना पहल शून्य भूख की दिशा में एक बड़ी छलांग है। यह 1 मिलियन स्कूलों में 100 मिलियन से अधिक बच्चों का पोषण कर रही है, जिसमें बाजरा शामिल है, जो भूख के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में एक कदम आगे बढ़ा रहा है।

'पांच न्याय' और '25 गारंटी' पर आधारित है अभियान करोड़ों घरों तक पहुंचेंगे पार्टी कार्यकर्ता

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने बुधवार को घर-घर गारंटी अभियान की शुरुआत की। इस अभियान के तहत कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता देश के करोड़ों घरों तक पहुंचेंगे और जनता को कांग्रेस की गारंटियों के बारे में जानकारी देंगे। मल्लिकार्जुन खरगे ने उत्तर पूर्वी दिल्ली के उस्मानपुर काठियावाड़ा में आयोजित हुए एक कार्यक्रम में घर-घर गारंटी अभियान की शुरूआत की। पार्टी का यह अभियान 'पांच न्याय' और '25 गारंटी' पर आधारित है।

घर-घर अभियान के तहत कांग्रेस कार्यकर्ता पांच न्याय और 25 गारंटी वाला कार्ड घर-घर जाकर वितरित करेंगे।

कांग्रेस का लक्ष्य आठ करोड़ परिवारों तक पहुंचने का है। अभियान की शुरूआत करते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि ह्यगारंटी के कार्ड हमारे लोग घर-घर बाटेंगे और हम लोगों को बताएंगे कि हमारी सरकार आने के बाद हम क्या क्या करेंगे।ह्ल खरगे ने कहा कि हम गारंटी देते हैं कि हमारी सरकार हमेशा लोगों के लिए काम करेगी। पीएम मोदी, मोदी की गारंटी की बात करते हैं, लेकिन उनकी गारंटी कभी लोगों तक नहीं पहुंची। खरगे ने कहा कि पीएम मोदी ने दो करोड़ नौकरियां हर साल देने का वादा किया था, लेकिन लोगों को वो नहीं मिलीं। कांग्रेस की पंच न्याय में युवा न्याय, नारी न्याय, किसान न्याय, श्रमिक न्याय और हिस्सेदारी न्याय शामिल हैं।

S□□□Ł, ´□•/□□□•/ □□¢ □Ø...□•/ □□Ł□□Ł □□□□Ł □□□□□ m□□U□ •/□□□´□•/ □´□¢¯U□□ ´□□. □□. ¨□/Ł ´□□□ ªU□'U□ x/zy, ´□□□ •/□□□´□□□□, □.□Ł. □U□˙U, §¢...1□U □□ □Ø□...□□ □□¢ yz□ »Ø□□□ ¿æ□□□U ´ªU□Ł □¢□`□ `□□□U□ •¢/´□'¢˙U §¢...1□U, (□.´□.) □□